जानवरों की कहानियॉ

अरेबियन नाइट्स से

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Jaanvaron Ki Khaniyan (Animal Stories)
Cover Page picture : Shaharzad Telling the Stories to Her Husband Shahariyar
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Persia (Modern Iran)

विंडसर, कैनेडा
नवम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
जानवरों की कहानियॉः अरेबियन नाइट्स से 5
1 एक बैल और एक गधा 7
2 एक भेड़िये और एक लोमड़े की कहानी 19
3 एक लोमड़े और एक कौए की कहानी 32
4 साही और कबूतर की कहानी 40
5 पानी के बतख और कछुए की कहानी 46
6 एक चुहिया और एक ततैये की कहानी 50
7 एक कौआ और एक बिल्ला 53
8 एक चिड़ा और एक मोर 55
9 एक मुर्गे और लोमड़े की मजेदार कहानी 59
10 चिड़ियें, जानवर और बढ़ई 66

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

जानवरों की कहानियाँः अरेबियन नाइट्स से[1]

सैंकड़ों साल पहले कुछ कहानियाँ कही गयीं थीं। वे कहानियाँ रोज रात को कही जाती थी और इस तरह से कही जाती थीं ताकि वे उसी रात में ख़त्म न हों और वे कहानियाँ अगली रात को भी जारी रखी जा सके। यह तो तुमको वह कहानी पढ़ कर ही पता चलेगा कि ऐसा क्यों होता था।[2]

इस ढंग से कहे जाने पर वे कहानियाँ कई साल तक चलती रहीं। कहा जाता है कि कुल मिला कर वे कहानियाँ **1000** से भी ज़्यादा थीं और इसी लिये **1000** रातों से भी ज़्यादा रातों तक चलीं और अरेबियन नाइट्स के नाम से मशहूर हुईं। बहुत सालों तक तो ये कहानियाँ लिखी ही नहीं गयीं सो ये बिखरी ही पड़ी रहीं। पर जब लिखी गयीं तो इस किताब की मूल कापी अभी तक नहीं मिल पायी है। फिर ये इकट्ठा की गयीं फिर भी इसकी सारी कहानियाँ एक साथ अभी भी कहीं नहीं मिलतीं। पहली बार इसकी शुरू की कहानी "हजार अफसाने"[3] में मिलती है।

ये कहानियाँ हारूँ अल रशीद के समय में, **786–808** एडी में, बगदाद, ईराक में लोक कथाओं के रूप में कही सुनी जातीं थी। भारत में ये कहानियाँ पहली बार ब्रिटेन की ईस्ट इंडिया कम्पनी ने **1814** में उर्दू में छपवायीं जो कोलकाता में मौजूद हैं। इसका दूसरा संस्करण **1818** में छापा गया।

इस किताब का जन्म कैसे हुआ यह एक लम्बी और मजेदार कहानी है। अभी बस इतना समझ लो कि यह किताब **1001** कहानियों का एक संग्रह है जो करीब करीब इतनी ही रातों में एक रानी ने अपने राजा पति से अपनी जान बचाने के लिये उसको सुनायी थीं।

इस किताब की सारी कहानियाँ तो आज मिलती भी नहीं हैं पर इस किताब में हर तरह की कहानियाँ हैं – जिन्न की, भूतों की, समुद्री यात्राओं की, राजाओं और रानियों की, वफा की, बेवफाई की, आदि आदि।

बहुत सारी कहानियाँ तो तुम लोग इसकी पढ़ सुन भी चुके हो पर शायद तुमको उस समय यह पता नहीं था कि ये कहानियाँ इस किताब की हैं। तुम आज भी वे कहानियाँ बड़े शौक से कहते और सुनते हो, जैसे अलादीन का चिराग, अली बाबा चालीस चोर, सिन्दबाद की समुद्री यात्राएँ, पर शायद आज भी तुम लोगों को यह मालूम नहीं कि ये सब कहानियाँ अरेबियन नाइट्स की हैं, और या फिर नहीं हैं।

आज हम इसी बड़ी किताब में से जानवरों की कुछ कहानियाँ तुम लोगों के लिये दे रहे हैं। ये कहानियाँ मनोरंजन के साथ शिक्षाप्रद भी हैं। आशा है कि तुम सबको ये कहानियाँ बहुत पसन्द आयेंगी।

---

[1] To read many stories from Arabian Nights go to -- www.sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/ .
All the stories are given here from this site only.

[2] To know some of this type of "Whys" read the Book "Kuchh Aitihasik Kahaniyan-4" written by Sushma Gupta in Hindi language.

[3] Hazar Afsane means one thousand stories.

1 एक बैल और एक गधा[4]

एक बार एक सौदागर था जो बहुत अमीर था। उसके पास बहुत सारे नौकर चाकर और जानवर थे। उसकी एक पत्नी थी और परिवार था और वह अपने खाने पीने के लिये खेती करता था।

उसके पास जंगली जानवरों और हर तरह की चिड़िया की बोली समझने की ताकत थी। अपने मरने के समय तो वह अपनी इस ताकत को किसी को भी भेंट कर सकता था पर अपने जीते जी वह इसे किसी को बता नहीं सकता था नहीं तो वह मर जाता।

इसलिये उसने इस बात को किसी को बताया नहीं था। सबसे छिपा कर रखा हुआ था।

एक दिन वह अपने नौकरों के साथ बैठा हुआ था और उसके बच्चे उसके आस पास खेल रहे थे। उसने बैल को गधे से कहते सुना — "तुम्हारे नीचे सब साफ और ताजा रहता है। लोग तुम्हारी नौकरी में लगे रहते हैं। वे तुमको साफ छना हुआ बाजरा खिलाते हैं, पीने के लिये साफ पानी देते हैं।

[4] The Tale of the Bull and the Ass – Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/51-bull-ass.htm also. Arabian Nights stories were originated from Persia, Asia.

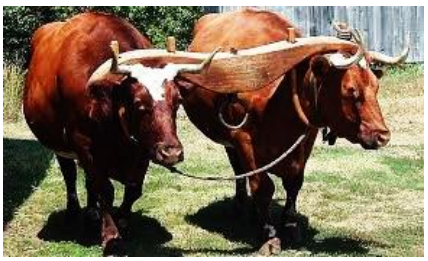

जबकि मेरे साथ ऐसा नहीं है। वे मुझे काम के लिये बीच रात में भी ले जाते हैं। मेरे गरदन पर जुआ[5] रखते हैं और मैं सुबह से शाम तक जमीन जोतते जोतते थक जाता हूॅ।

उसके बाद भी वे मुझसे अच्छा बरताव नहीं करते। मुझे एक बाड़े में बन्द कर देते हैं और मेरे सामने वे मिट्टी मिला भूसा और दाना फेंक देते हैं।

फिर मैं तो धूल मिट्टी में पड़ा रहता हूॅ जबकि तुम साफ जगह रहते हो। मैं अक्सर ही भूखा रहता हूॅ जबकि तुमको भर पेट खाना मिलता है।"

गधा बोला — "ओ बैलों के पिता, पहली बात तो यह है कि तुम बहुत सीधे हो और दूसरे तुमको सलाह देने वाला भी कोई नहीं है। तुम ताकत और उत्साह से भरे हुए हो और तुम अपने मालिक के साथ नम्र भी बहुत हो। तुम दूसरों को सुख पहुॅचाने के लिये बहुत ज़्यादा तकलीफ तक सह जाते हो।

अब तुम मेरी बात सुनो और अब जैसा मैं तुमसे कहता हूॅ वैसा ही करो। जब वे तुमको गन्दी जगह में बॉधते हैं तब तुम अपने माथे से जमीन को खुरच कर उनको यह दिखाते हो कि तुम वहॉ बहुत सन्तुष्ट हो।

[5] Translated for the word "Yoke". Yoke is a wooden log kept on the necks of bulls to manuevre them to take work – see its picture above.

जब वे तुम्हारी तरफ सूखा खाना फेंकते हो तब तुम उसके ऊपर बहुत लालची हो कर गिरते हो और उसको बहुत जल्दी से खा जाते हो।

पर अगर तुम मेरी बात मानोगे तो तुम ज़्यादा अच्छे रहोगे और मुझसे भी ज़्यादा अच्छी ज़िन्दगी गुजारोगे।

तो अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। जब वे तुमको खेत पर ले जायें तो तुम बस लेट जाना और जब तक न उठना जब तक कि वे तुमको बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला कर न उठायें। और अगर तुम उठ भी जाओ तो फिर दोबारा लेट जाना।

जब वे तुमको खाना दें तो उसको केवल सूँघ कर छोड़ देना। उसको छूना भी नहीं। बस अपने भूसे और दाने से ही खुश रहना। तुम इसको **3–4** दिन करके देखो तब तुमको शायद थोड़ा आराम मिलेगा।"

बैल ने सोचा कि गधा उसका अच्छा दोस्त था सो उसने उसको धन्यवाद दिया और बोला — "तुम ठीक कहते हो गधे भाई।"

अगले दिन किसान उस बैल को उसकी गरदन पर जुआ रख कर खेत ले गया और उसको काम में लगा दिया। पर बार बार वह बैल उस हल को झटका देता था इस पर उस किसान ने उसको बहुत मारा तो उसने अपनी गरदन पर रखा जुआ नीचे गिरा कर तोड़ दिया।

वह किसान तो यह सब देख कर हैरान रह गया। उसने बैल को खाने के लिये दाना और भूसा दिया पर बैल ने उसको केवल सूँघा और उसको वहीं छोड़ कर उससे जितनी दूर हो सकता था उतनी दूर जा कर लेट गया। सारी रात उसने बिना खाये ही निकाल दी।

अगले दिन जब किसान आया तो उसने सारा का सारा भूसा और दाना ऐसा का ऐसा ही पड़ा देखा और बैल को बिना खाना खाये अपनी पीठ के बल लेटा देखा तो वह उसके बारे में चिन्ता करने लगा।

उसने सोचा कि बैल बीमार लगता है इसी लिये यह कल खेत भी नहीं जोत सका और ठीक से खाना भी नहीं खा सका। उसने जा कर सौदागर से कहा कि लगता है बैल बीमार है उसने कल खेत पर भी काम नहीं किया और कल से खाना भी नहीं खाया।

सौदागर सब समझ गया कि ऐसा क्यों हो रहा था क्योंकि उसने कल बैल और गधे की बात सुन ली थी। सो वह बोला — "उस गधे को ले जाओ और हल का जुआ उसकी गरदन पर रख दो। बैल का काम उस गधे को करने दो।"

सो उस दिन सारे दिन बैल का काम गधे ने किया। जब शाम को गधा घर वापस आया तो मुश्किल से हिल डुल पा रहा था। जबकि बैल सारा दिन आराम से रहा और अपना दाना और भूसा

खाता रहा। उसने इस सबके लिये गधे को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जब गधा बाड़े में लौट कर आया तो बैल उसकी इज़्ज़त में उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "धन्यवाद गधे भाई। आज केवल तुम्हारी वजह से ही मैं सारा दिन आराम कर सका और मैंने अपना खाना भी बड़ी शान्ति से खाया।"

पर गधे ने इस बात का उसे कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह बहुत थका हुआ था और बैल को अपनी सलाह देने के लिये पछता रहा था कि केवल उसी की सलाह से आज उसको बैल का काम करना पड़ा। फिर उसने उसको अपनी जगह लौटाने का फैसला किया।

जब गधा अपनी जगह लौट आया तो सौदागर चॉदनी का आनन्द लेने के लिये अपनी छत पर आया। उसने गधे को बैल से कहते सुना — "कल तुम क्या करोगे?"

बैल बोला — "जैसा तुमने मुझे करने के लिये कल कहा था वैसा ही मैं कल भी करूॅगा।"

गधा बोला — "नहीं, कल तुम वैसा नहीं करोगे।"

"क्यों?"

"अब मै तुमको एक और अच्छी सलाह देता हूॅ। क्योंकि आज मैंने मालिक को यह कहते सुना है कि "अगर बैल काम करने के

लिये न उठे तो उसको कसाई को दे आना ताकि वह उसको काट सके और उसका मॉस गरीब लोगों को दे सके।"

इसलिये अब मुझे तुम्हारे लिये डर लगता है। इसलिये तुम्हारे लिये अच्छा तो यही होगा कि कल तुम काम पर चले जाओ।" बैल ने गधे को इस सलाह के लिये भी धन्यवाद दिया और ज़ोर से रॅभाया।

अगली सुबह वह सौदागर अपनी पत्नी के साथ उस जगह गया जहॉ वह बैल बॅधा हुआ था। तभी किसान उसको खेत पर ले जाने के लिये वहॉ आया तो उसका रोज का सा बरताव देख कर वह एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गया।

यह देख कर सौदागर इतनी जोर से हॅसा कि वह तो लेट सा ही गया। उसकी पत्नी ने पूछा — "तुम इतना क्यों हॅस रहे हो जी?"

सौदागर बोला — "कोई खास बात नहीं। मैं एक ऐसी छिपी हुई बात पर हॅस रहा हूॅ जो मैंने सुनी है पर मैं तुमको तब तक नहीं बता सकता जब तक मैं मर न रहा होऊॅ।"

पत्नी बोली — "तुमको यह बात मुझे बतानी ही होगी चाहे तुम उसकी वजह से मर ही क्यों न जाओ।"

वह बोला — "क्या कह रही हो तुम? क्या तुम चाहती हो कि मैं मर जाऊॅ? मैं तुमको अपनी मौत के डर की वजह से जानवरों और चिड़ियों की भाषा नहीं बता सकता।"

पत्नी को पति की इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह जानवरों और चिड़ियों की भाषा जानता था और उसको बताने से वह मर भी सकता था।

इसलिये वह बोली — "अल्लाह कसम, लगता है कि तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो। तुम मेरे ऊपर हॅस रहे हो। और क्योंकि तुम मुझे बता नहीं रहे हो इसलिये मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहने वाली। मैं जा रही हूॅ।" और उसने रोना शुरू कर दिया।

सौदागर बोला — "क्या हो गया है तुम्हें? कम से कम अल्लाह से तो डरो और मुझसे कोई और सवाल मत पूछो।"

"पर तब तुम मुझे यह तो बताओ कि तुम हॅस क्यों रहे थे?"

वह बोला — "जब मैंने अल्लाह से जानवरों और चिड़ियों की बोली समझने की प्रार्थना की उस समय मैंने कसम खायी थी कि मैं अपना यह भेद मरते दम तक किसी को नहीं बताऊॅगा।"

पर उसकी पत्नी तो कुछ सुनना ही नहीं चाहती थी। उसने उससे फिर उस बात को बताने की जिद की — "मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि तुम्हारा क्या होता है। मुझे तो तुम बस इतना बता दो कि बैल और गधे के बीच में क्या भेद की बात हुई।"

जब उसकी पत्नी किसी तरह से नहीं मानी तो उसने उससे कहा कि वह अपने माता पिता को, दूसरे सगे रिश्तेदारों को और पड़ोसियों को वहॉ बुलवा ले ताकि सब लोग यह जान लें कि वह क्यों मरा।

उसके ऊपर इस बात का भी कोई असर नहीं पड़ा और उसने ऐसा ही किया। उसने अपने माता पिता और सभी सगे रिश्तेदारों को और पड़ोसियों को अपने घर बुलवा लिया।

फिर सौदागर ने काज़ी और अपने वकील को बुलवाया और अपनी वसीयत तैयार की क्योंकि वह एक भेद खोलने जा रहा था और उस भेद को खोलने के बाद वह मर जाता।

सौदागर अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था क्योंकि वह उसकी चाची की बेटी थी और उसके बच्चों की मॉ थी। उसको उसके साथ रहते **20** साल हो गये थे।

जब सब लोग इकट्ठा हो गये तब वह बोला — "मेरे पास एक आश्चर्यजनक कहानी है अगर उसको मैं किसी को भी बताऊॅगा तो मैं मर जाऊॅगा।

इसलिये पहली बात तो यह है कि इस औरत को समझाओ कि यह अपनी जिद छोड़ दे क्योंकि इससे इसका पति और इसके बच्चों का पिता दोनों मर जायेंगे।"

पर पत्नी बोली — "पर मैं अपनी बात से नहीं मुकरने वाली चाहे मेरा पति मर ही क्यों न जाये। मुझे तो यह जान कर ही रहना है कि उस बैल और गधे के बीच में क्या भेद की बात हुई।"

यह सुन कर सौदागर उठा, उसने वज़ू किया और अपनी नमाज[6] पढ़ी और अपना भेद बताने और मरने के लिये वापस लौटा।

अब हुआ यह कि उस सौदागर के पास **50** मुर्गियॉ और एक मुर्गा भी था। वह उनसे विदा लेने के लिये उनके बाड़े में गया। वहॉ उसने अपने कई कुत्तों में से एक कुत्ते को मुर्गे से बात करते हुए सुना। वह मुर्गा उस समय एक मुर्गी के ऊपर से दूसरी मुर्गी के ऊपर कूद रहा था।

कुत्ता कह रहा था — "तुम कितने नीच हो। जिसने भी तुमको पाला होगा वह तुमसे कितना नाउम्मीद होगा। क्या तुमको आज जैसे दिन भी, जैसा कि आज का दिन है, अपनी करनी पर शरम नहीं आती?"

मुर्गा बोला — "आज के दिन में क्या खास बात है। क्या हुआ आज?"

कुत्ता बोला — "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि आज हमारे मालिक मरने जा रहे हैं? उनकी पत्नी ने यह जिद पकड़ रखी है कि वह अपना भेद उसको बतायें और अगर उन्होंने उसको वह भेद बताया तो फिर वह मर जायेंगे।

[6] Vazoo and Namaaz are the parts of a Muslim's daily worship which a Muslim does normally five times a day. While doing Vazoo he cleanses himself with water and then worships Allah.

हम कुत्ते तो उनके लिये दुख मना रहे हैं और तुम खुशी मना रहे हो। यह समय क्या खुशी मनाने का है यह समय तो दुखी होने का है।"

मुर्गा ज़ोर से हॅसा और बोला — "तब फिर ऐसा लगता है कि हमारे मालिक में अक्ल की कमी है। अगर वह अपने मामले एक पत्नी के साथ नहीं सिलट सकता तो उसकी पत्नी इस लायक ही नहीं है कि उसके साथ आगे रहा जा सके।

मुझे देखो, मेरे पास **50** मुर्गियॉ हैं। मैं एक को खुश करता हूॅ तो दूसरी को छेड़ता हूॅ, एक को भूखा रखता हूॅ तो दूसरी को ज़्यादा खिलाता हूॅ। और मेरे शासन में सब मुर्गियॉ मेरी बात मानती हैं। वह बेवकूफ है जो एक पत्नी को भी ठीक से नहीं रख सकता।"

इस पर कुत्ता बोला — "पर तुम क्या सोचते हो कि इस समय उसको क्या करना चाहिये।"

मुर्गा बोला — "उसको शहतूत[7] के पेड़ की कुछ डंडियॉ लेनी चाहिये और उसकी पीठ पर उसको उससे रोज मारना चाहिये जब तक कि वह रो रो कर यह न कहने लगे — "मेरे स्वामी, मुझसे गलती हो गयी। मैं वायदा करती हूॅ कि अब

[7] Translated for the word "Mulberry bush" – see its picture above.

जब तक में ज़िन्दा रहूँगी तब तक ऐसे सवाल मैं फिर कभी नहीं पूछूँगी।"

उसके बाद भी उसे उसको एकाध बार और मारना चाहिये तभी वह आजादी से रह सकता है और ज़िन्दगी का आनन्द ले सकता है। पर क्या करें, इस हमारे मालिक के पास न तो अक्ल है और न ही वह कुछ सोच सकता है।"

यह सुन कर सौदागर एक शहतूत के पेड़ के पास गया, उसकी कुछ डंडियॉ तोड़ीं और उनको अपनी पत्नी के कमरे में छिपा दिया।

फिर उसने उसको बुलाया — "आओ यहॉ आओ इस कमरे में, मैं तुमको वह भेद यहॉ बताता हूँ ताकि कोई मुझे देखे नहीं और बस फिर मैं मर जाऊँगा।"

पत्नी उसके साथ उस कमरे में घुसी तो उसने दरवाजा बन्द कर लिया और उसके शरीर के हर हिस्से पर यह कहते हुए उन डंडियों से उसकी पिटाई की — "अब आगे से क्या तुम फिर ऐसे सवाल पूछोगी जिनसे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है?"

वह उसको तब तक मारता रहा जब तक वह मार खा खा कर बेहोश नहीं हो गयी। और जब तक वह उसे मारता रहा वह बार बार यही कहती रही — "मैं सच कहती हूँ मैं अब आपसे कोई सवाल नहीं करूँगी। मुझे छोड़ दीजिये। मैं अब आपसे कुछ नहीं पूछूँगी।"

फिर पत्नी ने पति के हाथ और पैर दोनों चूमे और दोनों उस कमरे में से बाहर आ गये। अब वह एक बहुत ही अच्छे स्वभाव की औरत बन गयी थी जैसी कि उसको होना चाहिये था।

पत्नी के माता पिता अपने दामाद को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए और सौदागर ने इस तरह से मुर्गे से अपना घर चलाना सीखा। फिर वे मरते दम तक खुशी खुशी रहे।

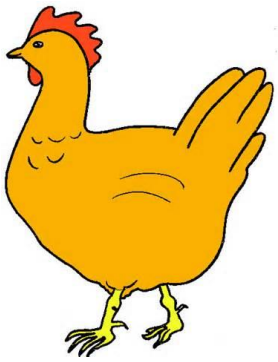

2 एक भेड़िये और एक लोमड़े की कहानी[8]

एक बार एक लोमड़ा और एक भेड़िया एक ही घर में रहते थे। भेड़िया बहुत ही बेरहम था जबकि लोमड़ा बहुत नरम दिल था।

इसी तरह से रहते हुए उन्हें कुछ दिन हो गये कि एक दिन वह लोमड़ा भेड़िये से बोला — "अगर तुम इसी तरीके से बरताव करते रहे तो अल्लाह तुम्हारे ऊपर राज करने की ताकत आदमी को दे देगा।

क्या तुम्हें मालूम है कि वह चिड़ियों को नीचे ला सकता है, वह मछलियों को पकड़ सकता है, वह पहाड़ तोड़ सकता है। और वह यह सब अपनी होशियारी और चालाकी की वजह से कर सकता है?"

पर भेड़िये ने उसकी यह सलाह नहीं मानी और उससे कुछ गुस्से से में बोला — "तुम मुझसे ऐसा किस अधिकार से बोल सकते हो? आगे से तुम मुझसे इस तरह मत बोलना। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें मुझसे कोई खराब बात सुननी पड़ जाये।"

[8] The Tale of the Wolf and the Fox – an animal tale from Arabian Nights. Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/57-wolf-fox-1.htm .

लोमड़ा बोला — "ठीक है ठीक है। मैं तुमसे ऐसा कुछ नहीं कहूँगा जो तुमको खराब लगे।" पर अपने दिल में उसने सोच लिया था कि एक दिन वह उसको मार कर ही रहेगा।

एक दिन लोमड़ा भेड़िये से बोला — "अल्लाह अपने नौकरों की गलतियों को माफ कर देते हैं। काश तुम जान सकते कि तुम्हारी वजह से मुझे कितना दर्द सहना पड़ा। उतना दर्द तो हाथी भी नहीं सह सकता पर मैं तुमसे कोई शिकायत नहीं कर रहा हूँ।

संत लोग कह गये हैं कि गुरू की मार पहले तो तकलीफ देती है पर बाद में फिर आराम देती है।"

भेड़िया बोला — "चलो मैंने तुमको माफ किया पर तुमको हमेशा मेरी ताकत की जानकारी रहनी चाहिये। समझे।"

इस पर लोमड़े ने जमीन पर लेट कर उसको सलाम किया और वहॉ से चला गया।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि लोमड़ा एक बागीचे में गया तो उसने उसकी दीवार के पास जमीन में एक गड्ढा खुदा हुआ देखा जिसे बन्द नहीं किया गया था।

उसको देख कर उसे लगा कि शायद वह गड्ढा किसी मतलब से खोदा गया होगा। ऐसा कौन होगा जो इस गड्ढे को देखे और इसे बन्द न करे क्योंकि इससे तो वह गड्ढा खोदने वाला खुद भी खतरे में पड़ सकता है।

हालॅकि यह बात सब अच्छी तरह से जानते हैं कि लोग अपने बागीचों मे लोमड़े की मूर्ति इसलिये बनवाते हैं कि जब कोई लोमड़ा उधर आये तो वह उनके जाल में फॅस जाये।

पर फिर भी मैं इस गड्ढे का ठीक से ध्यान रखूॅगा क्योंकि कहा गया है कि बच के रहना भी आधी होशियारी के बराबर ही है। पर ज़रा देखूॅ तो मैं यह गड्ढा है कैसा।"

कह कर वह गड्ढे के पास तक गया और उसने उसके चारों तरफ एक चक्कर लगाया। उसने देखा कि वह गड्ढा काफी गहरा था।

उसने सोचा कि "उस बागीचे के मालिक ने वह गड्ढा शायद इसलिये बनवाया होगा कि जो भी जंगली जानवर उसके बागीचे को खराब करने आये वह उस गड्ढे में गिर जाये और वह उसको पकड़ ले।

वह इस बात से बहुत खुश था कि उसने उस गड्ढे को देख लिया था और वह उस गड्ढे में गिरने से बच गया था। वह गड्ढा मिट्टी और चटाई से ढका हुआ था। उसको लगा कि काश उसका दुश्मन भेड़िया उस गड्ढे में गिर पड़े। बस यह सोचते ही वह वापस घर लौट पड़ा।

वह घर आ कर भेड़िये से बोला — "अल्लाह ने तुम्हारे लिये बागीचे में घुसने का एक बहुत ही आसान रास्ता निकाल कर रखा है ताकि तुम उसके अन्दर जा कर उस बगीचे का आनन्द ले सको।"

भेड़िये ने पूछा — "इसका क्या सबूत है कि तुम सच बोल रहे हो?"

लोमड़ा बोला — "मैं खुद वहॉ उस बागीचे तक गया था तो पता चला कि उस बागीचे का मालिक मर गया है। भेड़ियों ने उसे खा लिया है। सो मैं उस बागीचे चला गया और वहॉ मैंने पेड़ों पर बहुत सुन्दर सुन्दर फल लगे देखे।"

भेड़िये को लोमड़े की बातों पर ज़रा सा भी शक नहीं हुआ सो वह उस बागीचे की तरफ चल दिया। लोमड़ा भी उसके पीछे पीछे चल दिया।

जब वह भेड़िया उस गड्ढे के पास पहुॅचा तो पीछे से लोमड़ा बोला — "बस अब तुम बागीचे में घुस जाओ। तुमको यहॉ कोई सीढ़ी इस्तेमाल करने की भी जरूरत नहीं है क्योंकि बागीचे की दीवार तो पहले से ही टूटी हुई है।"

यह सुन कर भेड़िया यह सोच कर उस गड्ढे के ऊपर से चला कि वहॉ से वह बागीचे में घुस जायेगा पर जैसे ही वह गड्ढे के बीच में आया वह उस गड्ढे में गिर पड़ा।

इससे लोमड़ा बहुत खुश हुआ और खुशी से नाचने गाने लगा। कुछ देर बाद लोमड़े ने गड्ढे में झॉका तो देखा कि भेड़िया रो रहा था सो दिखाने के लिये वह भी उसके साथ रोने लगा।

भेड़िये ने लोमड़े से पूछा — "क्या तुम मुझ पर रहम दिखाने के लिये रो रहे हो?"

लोमड़ा बोला — "नहीं नहीं, अल्लाह की कसम नहीं। मैं तो इसलिये रो रहा हूॅ कि मुझे इस बात का बहुत अफसोस है तुम इस गड्ढे में बहुत पहले क्यों नहीं गिर पड़े?"

भेड़िया बोला — "ओ बुरा काम करने वाले, अभी तुम मेरी मॉ के पास जाओ और उसे बताना कि मैं इस गड्ढे में गिर पड़ा हूॅ। वह मेरे यहॉ से निकलने का कोई न कोई रास्ता जरूर ही निकाल लेगी।"

लोमड़ा बोला — "तुम्हारे अपने लालच की वजह से ही तुम्हारी यह हालत हुई है। अब तुम यहॉ से कभी बच कर बाहर नहीं निकल सकते। क्या तुमको इस कहावत का पता नहीं है "जो अपने अन्त के बारे में नहीं सोचता किस्मत भी उसकी कोई सहायता नहीं करती और न ही वह खतरों से सुरक्षित रह सकता है।"

भेड़िया बोला — "तुम मेरी दोस्ती के बारे में नहीं सोच रहे हो लोमड़े भाई। केवल अल्लाह ही मुझे इसका इनाम देगा।"

लोमड़ा बोला — "अरे ओ बेवकूफ, और तुम अपना जिद्दी बरताव और मेरी सलाह की बेइज़्ज़ती भूल गये।"

भेड़िया बोला — "मेरे पुराने पापों के लिये मुझे मत चिढ़ाओ क्योंकि दयावान लोगों से तो केवल माफी की ही उम्मीद रखी जाती है।"

और फिर उसने लोमड़े के साथ बहुत ही नरमी का बरताव किया।

वह उसके सामने बहुत रोया बहुत गिड़गिड़ाया और शिकायत की और प्रार्थना की कि वह उसके साथ इतनी बेरहमी का बरताव न करे। इस मुसीबत के समय में उसकी वहॉ से बाहर निकलने में उसकी सहायता करे।

सो वह लोमड़े से फिर बोला — "जाओ और एक रस्सी ले कर आओ। उसका एक सिरा वहॉ ऊपर एक पेड़ से बॉध दो और उसका दूसरा सिरा मुझे दे दो ताकि मैं उसको पकड़ कर इस गड्ढे में से बाहर आ सकूँ।

बाहर आने के बाद मैं तुमको जो कुछ भी मेरे पास है मैं वह सब तुमको दे दूँगा। मेरा यकीन करो।"

लोमड़ा बोला — "तुम मुझसे यों ही बेकार की बात कर रहे हो क्योंकि तुम्हारी ये बातें तुमको इस गड्ढे में से बाहर नहीं निकालने वाली।

तुमने मेरे साथ जो जो बुरे काम किये हैं उनको तुम एक बार फिर याद कर लो और सोचो कि तुम पत्थरों की मार से मारे जाने के कितने करीब हो।"

भेड़िया बोला — "तुम ऐसा क्यों नहीं सोचते कि जो कोई एक आदमी को मरने से बचाता है वह सारी जाति को मरने से बचाता है इसलिये तुम मुझे यहॉ से आजाद कराने की पूरी कोशिश करो लोमड़े भाई।"

लोमड़ा बोला — "मैं तुम्हारे इरादों को बाज़ और तीतर[9] के बराबर रख सकता हूॅ।"

भेड़िया बोला — "वह कैसे?"

और लोमड़े ने कहना शुरू किया — "एक बार मैं अंगूर खाने के लिये एक अंगूर के बागीचे में घुस गया तो मैंने वहॉ एक बाज़ को एक तीतर को पकड़ते हुए देखा पर तीतर उसकी पकड़ से निकल गया।

बाज़ उसके पीछे भागा और उससे बोला — "मुझे लगा कि तुम भूखे हो सो मुझे तुम्हारे ऊपर दया आ गयी। मैं तुम्हारे खाने के लिये कुछ दाने ले कर आया और तुमको पकड़ा ताकि मैं उन दानों को तुमको खाने के लिये दे सकूॅ पर तुम तो मुझसे दूर भाग गये।

मुझे नहीं मालूम कि तुम मुझसे दूर क्यों भागे। आओ बाहर आ जाओ और ये दाने ले लो जो मैं तुम्हारे खाने के लिये ले कर आया हूॅ। इससे तुम्हारी तन्दुरुस्ती अच्छी हो जायेगी।"

जब तीतर ने यह सुना तो उसे बाज़ के ऊपर विश्वास हो गया और वह बाहर आ गया। इसी समय बाज़ ने उसे अपने पंख से मारा और फिर से पकड़ लिया।

[9] Translated for the words "Falcon and Partridge" – see the picture of Falcon above and of the Partridge below it.

तीतर बोला — "तो तुमने मुझसे झूठ बोला। अल्लाह करे कि जब तुम मेरा मॉस खाओ तो वह तुम्हारे लिये जहर बन जाये।"

सो जब बाज़ ने तीतर का मॉस खाया तो उसका मॉस सचमुच में ही उसके लिये जहर बन गया। उस मॉस के खाते ही बाज़ के पंख नीचे गिर पड़े, वह कमजोर हो गया और वहीं मर गया।

लोमड़ा आगे बोला — "सो ओ भेड़िये, जो अपने भाइयों के लिये गड्ढा खोदता है वह खुद भी उसमें जल्दी ही गिर जाता है। पहले तुमने मुझे धोखा दिया था और अब तुम मुझसे दया की भीख मॉग रहे हो।"

भेड़िया बोला — "तुम मुझे ये सब कहानियॉ मत सुनाओ। मेरे बुरे कामों की भी मुझे याद मत दिलाओ। एक सच्चे दोस्त की तरह से मेरे ऊपर दया करो। सच्चा दोस्त तो सच्चे भाई से भी कहीं ज़्यादा अच्छा होता है।

अगर तुम मुझे आज बचा लोगे तो मैं तुम्हें कुछ खास चालें सिखाऊॅगा, जैसे बागीचे का दरवाजा खोलना, पेड़ों से फल तोड़ना, आदि आदि।"

लोमड़ा बोला — "तुम्हारे जैसे बेवकूफ के मुॅह से ऐसी बातें बड़ी अजीब सी लगती हैं।"

"तो फिर अक्लमन्द लोग क्या कहते हैं?"

लोमड़ा बोला — "अक्लमन्द लोगों का कहना है कि मोटे शरीर में मोटी अक्ल रहती है – अक्लमन्दी से कहीं दूर और इसी लिये तुम बेवकूफ हो।

मैं तुम्हारे बुरे बरताव को देखते हुए तुम्हारा सच्चा दोस्त कैसे हो सकता हूॅ। मैं तो तुमको अपना सच्चा दुश्मन मानता हूॅ जो अपनी मुश्किलों में भी खुश हो रहा है।

तुम कहते हो कि तुम मुझे चालें सिखाओगे। पहले तुम यहॉ से अपने बाहर निकलने के लिये अपनी चाल तो इस्तेमाल कर लो। तुम तो उस बीमार आदमी की तरह हो जो दूसरे बीमार आदमी से कह रहा हो — "मैं तुम्हें ठीक कर सकता हूॅ।"

तो दूसरा बीमार आदमी कहता है — "पहले तुम अपने आपको ठीक क्यों नहीं कर लेते?"

यह सुन कर पहला बीमार आदमी वहॉ से चला गया और दूसरे बीमार को वही छोड़ गया। अब तुम भी वहीं रहो जहॉ हो।"

भेड़िया समझ गया कि उसको इस लोमड़े से कोई सहायता नहीं मिलने वाली सो वह रोने लगा।

फिर वह अपने आपसे बोला — "अगर मैं यहॉ से बाहर निकल गया तो मैंने अपने से कमजोर लोगों के साथ जो बुरे काम किये हैं उनका प्रायश्चित जरूर करूॅगा।

मैं पहाड़ पर चला जाऊॅगा और अल्लाह की प्रार्थना करूॅगा। मैं जंगली जानवरों के साथ नहीं रहूॅगा और गरीबों को खाना खिलाऊॅगा।"

यह सुन कर लोमड़े को भेड़िये पर दया आ गयी। वह खुशी से भर गया। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और उसने अपनी पूॅछ उस गड्ढे में लटका दी ताकि भेड़िया उसकी पूॅछ पकड़ कर उस गड्ढे से बाहर आ सके।

पर लोमड़ा तो यह देख कर बहुत गुस्सा हो गया कि भेड़िया उठा और उसने लोमड़े की पूॅछ पकड़ कर बाहर आने की बजाय उसे खींच लिया जिससे वह लोमड़ा भी उस गड्ढे में गिर गया।

भेड़िया बोला — "अब बताओ तुम मेरे दुख में क्यों खुशी मना रहे थे? अब तुम मेरे पास आ गये हो तो साथ साथ मरने में ज़्यादा मजा आयेगा। अब इससे पहले कि तुम मुझे मारो मैं तुमको मार दूॅगा।"

लोमड़ा बोला — "मुझे मत मारो। मुझे मार कर तुमको कोई फायदा नहीं होगा क्योंकि इससे तो हम दोनों ही यहॉ मर जायेंगे।"

भेड़िया बोला — "तो बताओ कि यहॉ से बाहर निकलने की तुम्हारे पास क्या तरकीब है?"

लोमड़ा बोला — "जब मैंने तुम्हारे वायदों को सुना तो मुझे तुम्हारे ऊपर दया आ गयी और मैंने अपनी पूॅछ तुमको पकड़ने के

लिये इसलिये इस गड्ढे के अन्दर डाल दी ताकि तुम उसे पकड़ कर बाहर आ जाओ। पर तुमने अपनी गन्दी आदत नहीं छोड़ी।

अब हम लोगों को केवल एक ही तरकीब बचा सकती है, अगर तुम उस पर राजी हो तो।"

भेड़िये ने पूछा — "वह क्या?"

लोमड़ा बोला — "मैं तुम्हारे ऊपर चढ़ जाता हूॅ। तुम अपनी पूरी लम्बाई पर खड़े हो जाओ जब तक मैं जमीन के बराबर आ जाऊॅ। फिर मैं जमीन पर कूद जाऊॅगा और जब मैं गड्ढे के बाहर निकल जाऊॅगा तो फिर मैं तुमको जो कुछ भी तुम पकड़ कर बाहर आ सकोगे तुमको पकड़ा कर बाहर निकाल लूॅगा।"

भेड़िया बोला — "मुझे तुम्हारे ऊपर भरोसा नहीं है।"

इस पर लोमड़े ने पूछा — "तो क्या फिर इस गड्ढे से बाहर निकलने की तुम्हारे पास कोई दूसरी तरकीब है? अगर है तो मुझे बताओ और अगर नहीं है तो मेरे ऊपर भरोसा करो।

तुमको मेरे ऊपर किसी एक चीज़ के लिये तो भरोसा करना ही पड़ेगा – या तो मैं तुमको निकालने के लिये किसी को ले कर आऊॅगा या फिर तुमको यहॉ मरने के लिये छोड़ जाऊॅगा।

"भरोसा करना अच्छी बात है और भरोसा न करना बुरी बात है।" इसलिये तुम मुझ पर भरोसा रखो।"

भेड़िया बोला — "ठीक है। मैं तुम्हारी बात माने लेता हूॅ पर अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो देख लेना कि तुम भी बचोगे नहीं।"

इतना कह कर भेड़िया बिल्कुल सीधा खड़ा हो गया और लोमड़े को उसने अपने कंधों पर उठा लिया और जमीन के बराबर तक पहुॅचा दिया। लोमड़े ने उसके कंधों पर से एक कूद मारी और वह जमीन के ऊपर पहुॅच गया।

उसके बाहर कूदते ही भेड़िया चिल्लाया — "मुझे यहॉ से बाहर निकालना नहीं भूलना।"

लोमड़ा भी चिल्लाया — "मैंने अपनी पूॅछ नीचे गिरा कर तुम्हें बचाने का अपना काम कर दिया है लेकिन तुमने तो मुझे भी गिरा दिया। अब तुम मुझसे क्या उम्मीद रखते हो?"

यह सुन कर भेड़िये ने तो अपना सिर पीट लिया और लोमड़े से बोला — "अगर तुम मुझको बाहर निकाल दोगे तो मैं तुमको भारी इनाम दूॅगा।"

लोमड़ा बोला — "तुम्हारे इनाम देने के इस वायदे से तो मुझे एक सॉपिन की कहानी याद आ गयी।

एक सॉपिन थी जो भागी चली जा रही थी। उसको भागते हुए देख कर एक आदमी ने पूछा — "ओ सॉपिन तुम इतनी तेज़ तेज़ क्यों भाग रही हो?"

सॉपिन बोली — "मैं एक सॅपेरे से डर कर भाग रही हूॅ जो मुझे पकड़ कर बन्द कर लेना चाहता है। अगर तुम मुझे उससे बचा लोगे तो मैं तुमको अच्छा इनाम दूॅगी।"

उस आदमी ने उसको उठा कर अपनी छाती के पास वाली जेब में रख लिया।जब सॅपेरा वहॉ से चला गया तब उसने उस सॉपिन को अपनी जेब से बाहर निकाल दिया।

अब सॉपिन को उससे कोई डर नहीं था सो वह जाने लगी तो आदमी ने कहा — "मेरा इनाम कहॉ है जो तुमने मुझे देने का वायदा किया था?"

सॉपिन बोली — "तो फिर तुम ही बताओ कि मैं तुम्हारे शरीर के किस हिस्से में काटूॅ?" इतना कह कर उसने उसको तुरन्त ही काट लिया और वह वहीं मर गया।"

यह कह कर लोमड़ा एक पहाड़ी पर चढ़ गया और बागीचे के रखवालों को जगाने के लिये बहुत ज़ोर से चिल्लाया। वे जाग गये और गड्ढे के पास आ गये जहॉ भेड़िया उसमें गिरा पड़ा था।

लोमड़ा उनको आते देख कर वहॉ से भी भाग चुका था। बागीचे के रखवालों ने भेड़िये को इतने पत्थर मारे कि वह मर गया। लोमड़ा फिर वहीं अपने घर लौट आया और वहॉ ज़िन्दगी भर खुशी खुशी रहा।

3 एक लोमड़े और एक कौए की कहानी[10]

एक लोमड़ा एक पहाड़ की एक गुफा में रहता था। जब भी उसको एक बच्चा पैदा होता और वह बड़ा हो जाता तो वह उसको खा जाता क्योंकि उसको भूख बहुत लगती थी।

अगर वह अपने बच्चों को न खाता तो उसके वे बच्चे बड़े हो जाते और फिर वह अपने बच्चों का आनन्द लेता। पर फिर भी उसके लिये यह बड़े दुख की बात थी।

अब हुआ यह कि कुछ समय बाद पास के एक पेड़ पर एक कौए ने अपना घोंसला बना लिया। जब उस लोमड़े ने उसे देखा तो उसने सोचा कि वह उससे दोस्ती कर ले ताकि वह उसको रोज का खाना लाने में सहायता कर सके। क्योंकि कौआ ऐसे मामलों में उसके लिये बहुत कुछ कर सकता था जो वह खुद अपने लिये नहीं कर सकता था।

सो वह कौए के पास गया और बोला — "मैं तुमको सलाम करता हूँ ओ कौए, तुम मेरे पड़ोसी हो और तुम्हारा मेरे ऊपर हक

[10] A Tale of the Fox and the Crow – an animal tale from Arabian Nights. Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/58-fox-crow.htm

है। इसके अलावा मैं तुमको प्यार भी बहुत करता हूॅ। बोलो क्या बोलते हो?"

कौआ बोला — "हालॉकि सच बोलना ही अच्छा बोलना होता है पर मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि ये शब्द तुम्हारे दिल से नहीं निकल रहे इसलिये तुम मेरे दुश्मन हो।

मैं तुम्हारा खाना हूॅ और तुम मुझे खाने वाले हो। मैं तो चिड़िया की जाति का हूॅ और तुम जंगली जानवर की जाति को हो इसलिये भी हमारी तुम्हारी दोस्ती नहीं चल सकती।"

लोमड़ा बोला — "मैं तुम्हारे साथ ज़िन्दगी भर रहना चाहता हूॅ ताकि हम लोग एक दूसरे की सहायता कर सकें। मेरे पास दोस्ती की अच्छाई की बहुत सारी कहानियॉ हैं अगर तुम सुनना चाहो तो मैं तुम्हें उन्हें सुना सकता हूॅ।"

कौआ बोला — "तुम चाहो तो वे कहानियॉ मुझे सुना सकते हो ताकि मैं निश्चय कर सकूॅ कि मैं तुमको अपना दोस्त बनाऊॅ या नहीं।"

लोमड़ा बोला — "तो लो सुनो यह कहानी एक खटमल[11] और एक चूहे की। बहुत पुरानी बात है कि एक शहर में एक सौदागर रहता था। उसके पास बहुत पैसा था और बहुत सारा सामान था।

[11] Translated for the word "Bedbug" – see its picture above

एक रात एक खटमल ने उस सौदागर के बिस्तर में बसेरा कर लिया। उसको सौदागर का शरीर बहुत मुलायम लगा। वह खटमल बहुत भूखा था सो उसने सौदागर का खून पीने के लिये सौदागर को काटा।

खटमल के काटने से सौदागर जाग गया और उसने अपनी एक नौकरानी और कई नौकरों को उस खटमल को ढूँढने के लिये बुलाया। उन्होंने उस खटमल को ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह तो वहॉ से भाग गया था और जा कर एक चुहिया के बिल में छिप गया।

चुहिया ने जब उसे अपने घर में देखा तो उससे पूछा — "तुम यहॉ मेरे पास क्यों आये हो? न तो तुम मेरे स्वभाव जैसे हो और न ही तुम मेरी जाति के हो।"

वह खटमल बोला — "मैं तुम्हारे घर में मरने से बचने के लिये शरण लेने आया हूँ। मैं यहॉ कोई शरारत या कुछ और भी नहीं करूँगा जो तुमको अपना घर छोड़ना पड़े। मैं तुम्हारी इस दया का बदला जरूर चुका दूँगा।"

यह सुन कर चुहिया बोली — "अगर जो कुछ तुम कह रहे हो वह सच है तब तुम यहॉ रह सकते हो। इस सौदागर के खून के नुकसान के लिये तुम इतने दुखी न हो। तुम सन्तुष्ट रहो। यहॉ तुम हिफाजत से रहोगे।"

खटमल बोला — "ठीक है। मैं तुम्हारा कहना जरूर मानूँगा।"

और इस तरह वह खटमल उस चुहिया के घर में रहता रहा। दिनों दिन उन दोनों में प्यार बढ़ता जा रहा था। वह खटमल रात को सौदागर के बिस्तर में पहुॅच जाता और दिन भर वह चुहिया के घर में रहता।

एक दिन ऐसा हुआ कि वह सौदागर घर में बहुत सारी दीनार[12] ले कर आया और उनको रखने लगा।

जब चुहिया ने उन सिक्कों की आवाज सुनी तो उसने अपना सिर अपने बिल के बाहर निकाला और उन दीनारों की तरफ देखा और तब तक देखती रही जब तक वह उनको अपने तकिये के नीचे रख कर सो नहीं गया।

उसके सोने के बाद वह चुहिया खटमल से बोली — "तुमने देखा नहीं है कि उस सौदागर के पास कितना खजाना है। क्या तुम कोई रास्ता बता सकते हो जिससे वह दीनारें हमारे पास आ जायें?"

खटमल बोला — "यह कोई अच्छा विचार नहीं है जब तक कि इस काम को करने में कोई होशियार न हो। जैसे बेचारी चिड़िया अन्न का दाना उठाती है और शिकारी के जाल में फॅस जाती है।

तुम्हारे अन्दर इतनी ताकत नहीं है कि तुम दीनार को उठा कर अपने घर ला सको और न ही मेरे अन्दर इतनी ताकत है कि मैं उसको घसीट कर ला सकूॅ। मैं तो एक सिक्का भी वहॉ से नहीं ला सकता। पर तुम उनका करोगी क्या?"

[12] Deenaar – the gold coins used as money in those times in Arabian countries.

चुहिया बोली — "मैंने अपने घर के **70** दरवाजे बनाये हैं पर मैंने अपने घर में कीमती चीज़ें रखने के लिये एक अलग जगह बना रखी है। जब तक तुम इस सौदागर को इसके घर से नहीं भगा देते तब तक मैं अपने काम में कामयाब नहीं हो सकती और वह हमारी बदकिस्मती होगी।"

"ठीक है। मैं इस सौदागर को तुम्हारे लिये घर से भगाने की कोशिश करूँगा।" उस रात खटमल ने उस सौदागर को रात में कई बार काटा और बहुत तेज़ काटा।

उस सौदागर का धीरज छूट गया और वह वहॉ से उठ कर अपने दरवाजे के बाहर बिछी बैन्च पर जा कर लेट गया और सुबह तक वहीं सोता रहा।

इस बीच चुहिया आयी और वहॉ से उसने सौदागर के तकिये के नीचे रखी दीनारें ले जानी शुरू कर दीं। वह उनको तब तक ले जाती रही जब तक कि वह उन सबको अपने घर नहीं ले गयी।"

लोमड़े ने अपनी कहानी जारी रखी — "इस तरह उस कीड़े ने उस चुहिया के उपकार का बदला चुहिया को उन दीनारों को ले जाने में सहायता करके चुकाया।"

कौआ बोला — "यह तो आदमी आदमी पर निर्भर करता है कि वह दूसरे का ऐहसान पलट कर वापस करना चाहता है या नहीं। अगर मैं तुम्हारी सहायता करूँ जो मेरा दुश्मन है तो मैं तो सारी दुनियॉ से ही अलग हो जाऊँगा।

क्योंकि तुम बहुत चालाक हो। तुम तो अगर अपने ऊपर भी कसम खाओ उसके बाद भी तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं किया जा सकता।

अभी अभी तो मैं भेड़िये के साथ तुम्हारे बुरे कामों की कहानी सुन कर चुका हूँ कि तुमने उसके साथ किस तरह का बरताव किया।

तुमने ऐसा बरताव तो उसके साथ किया जो तुम्हारी अपनी जाति का था और जिसके साथ तुम कुछ दिनों से रह रहे थे फिर भी तुमने उसके साथ बुरा बरताव करना नहीं छोड़ा।

फिर मैं तुम्हारे ऊपर कैसे विश्वास कर सकता हूँ? जो तुम्हारी किस्म का नहीं है, जो तुम्हारी जाति का नहीं है और जो तुम्हारा दुश्मन भी है। मैं तो तुम्हारा और अपना केवल बाज़[13] और चिड़ियों से ही मुकाबला कर सकता हूँ।"

"कैसे?"

कौआ बोला — "एक बार एक बाज़ था जो अपनी जवानी के दिनों में बहुत बेरहम था। वह हमेशा दूसरी चिड़ियों को तंग किया करता था। पर जैसे जैसे वह बड़ा होता गया वह कमजोर होता गया।

[13] Translated for the word "Falcon" – see its picture above.

सो उसकी ताकत तो कम होती गयी पर उसकी चालाकियॉ बढ़ती गयीं। अब वह अपना खाना धोखे और चालाकी से ले लेता था। तुम भी वैसे ही हो। तुम भले ही किसी काम में फेल हो जाओ पर तुम्हारी चालाकी कभी फेल नहीं हो सकती।

अगर तुमको खाना सीधे सीधे नहीं मिलता तो तुम उसको धोखे से लेने की कोशिश करोगे। पर मैं उस तरह का नहीं हूॅ। मेरा दिमाग भी तेज़ है और ऑखें भी।

पर मैं तुम्हारे लिये चिन्ता करता हूॅ कि अगर तुमको कभी तुम से ज़्यादा चालाक मिल गया तो तुम उसी तरीके से परेशान होगे जैसे कि चिड़ा हुआ था।"

लोमड़े ने पूछा — "चिड़ा कैसे परेशान हुआ था मुझे उसकी कहानी सुनाओ।"

कौआ बोला — "एक बार एक चिड़ा एक भेड़ के ऊपर बैठा हुआ था जब उसने इधर उधर देखा तो उसको एक बड़ा गरुड़[14] दिखायी दिया जो एक नये पैदा हुए मेमने को अपने पंजे में पकड़ कर उड़ गया।

यह देख कर उस चिड़े ने अपने पंख फड़फड़ाये और बोला — "मैं भी ऐसा ही करूॅगा।" और उसने उस गरुड़ से भी बड़ी नकल करने की कोशिश की।

[14] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

वह उड़ा और एक मोटे से मेमने के ऊपर जा कर बैठ गया। जैसे ही वह वहॉ बैठा उसने उड़ने के लिये अपने पंख फड़फड़ाये पर उसके पैर उसकी ऊन में फॅस गये। उसने उड़ने की बहुत कोशिश की पर वह वहॉ से उड़ ही नहीं सका।

भेड़ चराने वाला यह सब देख रहा था – पहली वाली घटना भी और यह वाली घटना भी। वह भागा भागा आया और उसने चिड़े को पकड़ लिया। उसने उसके दोनों पैर एक रस्सी से बॉध दिये और उसे अपने बच्चों की तरफ उनके खेलने के लिये फेंक दिया।

सो तुम ऐसे ही हो। जाओ और जा कर शान्ति से अपने घर में रहो।"

लोमड़े ने नाउम्मीदी और दुख से अपने दॉत पीसे। कौए ने उस के दॉत पीसने की आवाज सुन कर कहा — "यह तुम अपने दॉतों से कैसी आवाज निकाल रहे थे?"

लोमड़े ने जवाब दिया — "मैं अपने दॉत पीस रहा हूॅ क्योंकि तुम मुझसे भी बड़े नीच और बेईमान हो।" और अपने घर वापस चला गया।

4 साही और कबूतर की कहानी[15]

एक बार एक साही[16] एक खजूर के पेड़ के नीचे रहने के लिये आया। उसी पेड़ के ऊपर एक कबूतर[17] अपनी पत्नी के साथ रहता था।

साही ने सोचा कि यह कबूतर का जोड़ा तो इस पेड़ के फल खाता है पर मुझे इस पेड़ के फल खाने का कोई मौका नहीं है सो मुझे उन फलों को खाने के लिये कोई चाल खेलनी चाहिये।

उसने उस पेड़ के पास ही एक गड्ढा खोद लिया और उसी में अपनी पत्नी के साथ रहने लगा।

उसने अपनी पूजा और प्रार्थना करने के लिये एक और जगह चुन ली और वह वहॉ प्रार्थना करने के लिये यह दिखाने के लिये जाने लगा जैसे कि वह अल्लाह का बहुत बड़ा पुजारी है।

उन कबूतरों में से नर कबूतर ने उसको प्रार्थना करते देखा तो वह उससे बहुत प्रभावित हुआ और उसके मन में साही के लिये दया और प्रेम पैदा हो गया।

---

[15] Tale of the Hedgehog and the Wood Pigeons – an animal story from Arabian Nights. It may be read at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/59-hedgehog.htm

[16] Translated for the word “Hedgehog” – see its picture above.

[17] Translated for the word “Wood Pigeon”

कबूतर ने उससे पूछा — "तुम कितने सालों से ऐसा कर रहे हो साही?"

साही बोला — "हो गये होंगे करीब **30** साल।"

कबूतर ने फिर पूछा — "और तुम खाते क्या हो?"

साही ने जवाब दिया — "जो कुछ भी खजूर के पेड़ से गिर जाता है वही खा लेता हूॅ।"

कबूतर ने फिर पूछा — "और तुम पहनते क्या हो?"

साही बोला — "में कॉटे पहनता हूॅ और वही मेरे लिये ठीक भी हैं।"

कबूतर ने फिर पूछा — "और तुमने रहने के लिये किसी और जगह की बजाय यही जगह क्यों चुनी है?"

साही ने बड़े भोलेपन से जवाब दिया — "जो अनजान हैं उनको सिखाने के लिये और जो गलती करते हैं उनको ठीक करने के लिये।"

कबूतर बोला — "मुझे तुम्हारा यह किस्सा सुन कर अच्छा लगा पर अब तुम मुझे अपनी पत्नी के बारे में कुछ बताओ।"

साही बोला — "मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम जो कुछ कह रह हो वह न करो और तुम एक ऐसे चरवाहे की तरह से हो जाओ जिसने मौसम में बीज बोने से यह कहते हुए मना कर दिया कि "मुझे डर है कि मेरे बीज मेरी उम्मीदों के मुताबिक फसल नहीं

उगायेंगे, और जल्दी में बीज बोने से तो मेरी मेहनत बेकार ही जायेगी।"

पर जब फसल काटने का समय आया और सारे लोग अपनी अपनी फसल काट कर ले जाने लगे तो वह अपने उस फैसले के लिये इतना पछताया कि बेचारा मर ही गया।"

कबूतर बोला — "तो फिर मैं क्या करूँ जिससे कि मैं इस दुनियॉ के बन्धन से छूट जाऊँ?"

साही उसको समझाते हुए बोला — "अपने आपको दूसरी दुनियॉ के लिये तैयार करो। थोड़े से खाने में ही सन्तुष्ट रहो।"

कबूतर ने पूछा — "ऐसा मैं कैसे कर सकता हूँ? मैं तो चिड़िया हूँ। मैं तो इस खजूर के पेड़ से ज़्यादा आगे अपनी रोज की रोटी के लिये जा ही नहीं सकता। और अगर मैं ऐसा करता भी हूँ तो मुझे किसी दूसरी जगह का पता ही नहीं है कि मैं जाऊँ कहॉ।"

साही बोला — "तुम यह पेड़ हिला सकते हो ताकि बहुत सारे फल नीचे गिर जायें। वे फल तुम और तुम्हारी पत्नी के लिये काफी होंगे। और फिर तुम और तुम्हारी पत्नी किसी पेड़ के नीचे घोंसला बना कर उसमें रहो ताकि वहॉ तुम शान्ति से रह सको।

पेड़ से गिरे हुए सारे फल अपने घोंसले में ले जाओ, उनको उस समय के खाने के लिये अपने घर में इकट्ठा करके रखो जब फल नहीं गिरते। और ब्रह्मचर्य[18] का पालन करो।"

[18] Translated for the words "Abstinence of Sex"

कबूतर ने उसको यह सब बताने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और फिर वहॉ से चला गया। उसने और उसकी पत्नी दोनों ने बड़ी मेहनत से उस पेड़ को हिला कर उसके सारे फल नीचे गिरा लिये।

जब वह कबूतर और उसकी पत्नी ऊपर से पेड़ हिला कर फल गिरा रहे थे तो साही उनको बीन बीन कर अपने घर में इकट्ठा कर रहा था। साही ने यह सोचते हुए उन फलों से अपना घर भर लिया कि जब कबूतर को फलों की जरूरत होगी तब वह उन्हें मुझसे मॉग लेगा।

इस तरह अब इन कबूतर पति पत्नी को अपने खाने के लिये मेरे आसरे रहना पड़ेगा। तब मैं उनको किसी समय मार लूँगा और खा जाऊँगा। और उसके बाद तो फिर सारे खजूर मेरे ही होंगे।

उधर जब कबूतरों ने खजूर का पेड़ हिला कर उसके सारे फल नीचे गिरा लिये तो वे उन फलों को इकट्ठा करने के लिये नीचे आये तो उन्होंने देखा कि साही तो सारे फल वहॉ से उठा कर अपने घर ले गया है और वहॉ तो एक भी खजूर नहीं है।

वह साही से बोला — "हमको यहॉ जमीन पर तो कोई फल दिखायी नहीं दे रहा और अब तो हम यह भी नहीं जानते कि अब हम क्या खायें।"

साही बोला — "हो सकता है कि उन फलों को हवा उड़ा कर ले गयी हो पर अब तुम फलों से अपना ध्यान हटा कर भगवान में अपना ध्यान लगाओ। यही मोक्ष का तरीका है।"

वह उनको तब तक उपदेश देता रहा जब तक कि उन लोगों का उसमें विश्वास पैदा नहीं हो गया। उसके बाद वह अपने घर में कूद गया।

उसको इस तरह करते देख कर कबूतर बोला — "आज की रात का कल की रात से क्या रिश्ता? साही, तुमको मालूम होना चाहिये कि दुखियों का भी कोई सहारा है।

चालाकियों और अत्याचारों से जरूर बचना चाहये कहीं ऐसा न हो कि उनका फल तुमको खुद को ही न भोगना पड़े जैसे कि उन लोगों को भोगना पड़ा जिन्होंने सौदागर को तंग किया था।"

"वे लोग कौन थे और उन्होंने क्या फल भोगा था? किन लोगों ने सौदागर को कैसे तंग किया था?"

कबूतर आगे बोला — "एक बार सिन्ध नाम का एक शहर था। वहॉ एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था। एक बार उसने अपने ऊँटों पर अपना सामान लादा और उसे बेचने के लिये चल दिया।

दो धोखा देने वाले यह सब देख रहे थे सो वे दोनों भी सौदागर का वेश रख कर उसके पीछे पीछे चल दिये। पहली बार जहॉ वह अमीर सौदागर रुका वे दोनों भी वहीं रुक गये।

वहॉ उन्होंने उसको धोखा देने का और उसका सब कुछ ले लेने का प्लान बनाया। पर इसी समय उन दोनों ने आपस में भी एक दूसरे को भी धोखा देने का प्लान बनाया।

इससे अगर वे एक दूसरे को धोखा देने में कामयाब हो गये तो एक अकेला आदमी ही उस अमीर सौदागर के सारा सामान का मालिक बन जायेगा।

यह सब सोच कर उन दोनों में से एक ने खाना लिया, उसमें जहर मिलाया और अपने साथी की तरफ चला। उधर दूसरे साथी ने भी यही किया। उसने भी अपना खाना लिया उसमे जहर मिलाया और अपने साथी की तरफ चल दिया।

और दोनों ने एक दूसरे का वह जहरीला खाना खाया।

खाना खा कर वे बहुत देर तक उस अमीर सौदागर के पास बैठे रहे थे फिर वहॉ से चले गये पर जब वे बहुत देर तक वापस नहीं आये तो उस अमीर सौदागर ने उनको इधर उधर ढूँढा तो उन दोनों को मरा हुआ पाया।

वह जान गया कि वे धोखा करने वाले थे और उसके साथ धोखा करने आये थे पर वे अपने ही जाल में फॅस कर मर गये।

5 पानी के बतख और कछुए की कहानी[19]

एक बार एक बतख बहुत ऊपर उड़ा और बहते हुए पानी में खड़ी एक चट्टान पर जा कर बैठ गया। जब वह वहॉ बैठा हुआ था तो पानी की एक लहर एक आदमी का ढॉचा उसके पास ला कर छोड़ गयी।

बतख ने उसको ठीक से देखा तो उसको पता लगा कि वह तो एक आदमी का शरीर था जो एक चट्टान से आ कर रुक गया था। उसने उस शरीर पर एक निशान भाले का और एक निशान तलवार का देखा।

उसने सोचा कि शायद यह आदमी कोई बुरा काम करने वाला था इसी लिये कुछ आदमियों ने इसको मार डाला होगा और अब वे लोग शान्ति से रह रहे होंगे।

वह बतख यह सोच ही रहा था कि एक गिद्ध और कुछ बड़ी चिड़ियॉ उसके ऊपर आयीं। उनको आते देख कर उसने सोचा कि अब उसको वहॉ नहीं रुकना चाहिये।

वह यह सोच कर वहॉ से उड़ चला और एक ऐसी जगह जा कर बैठ गया जहॉ से वह सब कुछ देख सकता था कि वहॉ क्या हो

[19] Story of a Water Fowl and a Tortoise – an animal tale from Arabian Nights. Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/60-tortoise.htm

रहा था। अबकी बार वह एक नदी के बीच में उगे हुए एक पेड़ पर आ कर बैठ गया।

वह अपने पैदा होने की जगह छोड़ने की वजह से बहुत दुखी था। वह सोच रहा था कि ये दुख मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रहे।

पहले मैंने वह मरा हुआ शरीर देखा। उसको देख कर मुझे लगा कि मैं उसको खा लूँगा पर उसके बाद वहॉ वे बड़ी बड़ी चिड़ियें आ गयीं तो उनकी वजह से मुझे अपनी जन्म भूमि तक छोड़नी पड़ी और यहॉ अनजानी जगह में आना पड़ा। मैं अपने इस बुरे भाग्य से कैसे बचूँ?

जब वह यह सोच ही रहा था तो एक नर कछुआ नदी में आ पहुँचा। वह उस बतख के पास आया और उसको सलाम किया और उससे पूछा — "तुम यहॉ इतनी दूर कैसे आ गये?"

बतख बोला — "कुछ दुश्मन वहॉ आ गये थे और अक्लमन्दों का कहना है कि जहॉ दुश्मन रहते हों वहॉ नहीं रहना चाहिये।"

कछुआ बोला — "अगर ऐसा है तो मैं तुमको किसी भी तरह अकेला नहीं छोड़ूँगा। मैं हमेशा तुम्हारे सामने ही खड़ा रहूँगा ताकि अगर तुमको किसी चीज़ की जरूरत पड़े तो मैं तुम्हारे पास ही रहूँ।

मुझे उम्मीद है कि तुमको मेरा साथ अच्छा लगेगा क्योंकि आज से मैं तुम्हारा नौकर रहूँगा और तुम्हारी देखभाल करूँगा। और देखो

दुखी बिल्कुल भी मत होना क्योंकि दुख से ज़िन्दगी खराब हो जाती है।"

फिर दोनों कुछ दूर तक साथ साथ चले कि बतख फिर बोला — "मुझे समय के इधर उधर होने से बहुत डर लगता है।"

कछुआ उसके पास आया, उसे उसकी ऑखों के बीच में चूमा और उसको आशीर्वाद देता हुआ बोला — "चिड़ियें हमेशा तुम्हारे शब्दों में अक्ल की बातें पायेंगी।"

वह बतख को दिलासा देता ही रहा जब तक उसको यह भरोसा नहीं हो गया कि बतख वहॉ अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रहा था।

बतख को भी उसके शब्दों से बहुत तसल्ली मिली। उसके बाद वह बतख अपनी पुरानी जगह उड़ गया। वहॉ जा कर उसने देखा कि वे बड़ी चिड़ियें वहॉ से चली गयी हैं।

उन्होंने उस आदमी के शरीर को पूरा का पूरा खा लिया था और अब उसकी तो बस हड्डियॉ ही हड्डियॉ रह गयीं थीं।

यह देख कर वह वापस कछुए के पास उड़ कर आ गया और उसको बताया कि उसके दुश्मन वहॉ से चले गये हैं और अब वह अपने घर अपने लोगों के साथ रहने के लिये वापस जा रहा था।

वे दोनों बतख के घर तक गये और देखा कि अब वहॉ पर कोई डर नहीं है सो वे दोनों वहॉ उस टापू पर आनन्द से रहने लगे।

जब वे वहॉ पर ज़िन्दगी का आनन्द ले रहे थे कि अचानक एक भूखी चील ने आ कर बतख के पेट में अपनी चोंच मारी और उसको मार डाला।

उसकी मौत की वजह थी तारीफ करने के तरीके की तरफ ध्यान न देना। ऐसा कहा जाता है कि उसने तारीफ इस तरह से की — "सब अल्लाह की मेहरबानी है। वही हुकुम देता है वही सबको चीज़ें देता है और वही सबका पालन करता है।"

और इसी वजह से बतख का यह अन्त हुआ।

6 एक चुहिया और एक ततैये की कहानी[20]

एक बार एक चुहिया और एक मादा ततैया एक गरीब किसान के घर में एक साथ ही रहते थे। एक बार उस किसान का एक दोस्त बीमार पड़ गया तो डाक्टर ने उसको धुले तिल[21] खाने की सलाह दी।

सो उस किसान ने एक आदमी से अपने दोस्त के लिये तिल मॉगे। उस आदमी ने उस किसान को एक डिब्बा भर कर तिल दे दिये।

वह उन तिलों को ले कर घर गया और उन्हें अपनी पत्नी को दे कर उन्हें धो कर तैयार करने के लिये कहा। पत्नी ने उनको धोया और उनका छिलका निकाल कर सूखने के लिये डाल दिया।

मादा ततैये ने जब उन तिलों को देखा वह उनको वहॉ से उठा उठा कर अपने छेद में ले जाने लगी। वह सारा दिन उनको ले जाती रही जब तक कि वह उनको काफी सारा नहीं ले गयी।

शाम को जब किसान की पत्नी आयी तो उसने देखा कि उसके बहुत सारे तिल तो वहॉ से जा चुके हैं। पहले तो वह वहॉ आश्चर्य

[20] Tale of the Mouse and the Ichneumon – an animal tale from Arabian Nights. Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/61-mouse.htm

[21] Translated for "Washed Sesame Seeds"

करती खड़ी रही कि उसके तिल कौन ले गया पर फिर वह वहीं यह देखने के लिये बैठ गयी कि देखूॅ तो ये तिल कौन ले जा रहा है।

कुछ देर बाद जब मादा ततैया वहॉ वह तिल लेने के लिये आयी तो उसने देखा कि किसान की पत्नी तो वहॉ बैठी पहरा दे रही है।

उसने सोचा कि बस अब यहॉ तो मेरा काम खत्म हो गया। यह तो यहॉ मेरे ऊपर पहरा देने के लिये बैठी हुई है पर फिर भी आज मैंने काफी अच्छा काम कर लिया। अब मैं सीधी सादी बन सकती हूॅ और जो कुछ भी मैंने बुरा काम किया है उससे हाथ धो सकती हूॅ।

ऐसा सोचते हुए वह अपने छेद में से तिल उठा कर वहीं ले जाने लगी जहॉ से वह उनको ले कर आ रही थी।

उसको तिल ले जाते देख कर किसान की पत्नी तुरन्त ही उठ खड़ी हुई और मादा ततैये को यह करते हुए देख कर सोचा कि लगता है इसने हमारा नुकसान नहीं किया है क्योंकि यह तो मेरे तिल उसके छेद से वापस ला रही है जिसने हमारा नुकसान किया है।

मैं अभी यहीं बैठ कर उसको देखती हूॅ जो वाकई में मेरे ये दाने उठा कर ले जाता रहा है। सो वह फिर वहीं बैठ गयी।

इतने में मादा ततैये ने चुहिया से जा कर कहा — "बहिन, वह कोई अच्छा आदमी नहीं होता जो दोस्ती में वफादार नहीं होता।"

चुहिया बोली — "मुझे तुम्हारा साथ भी अच्छा लगता है और तुम्हारे पास भी रहना अच्छा लगता है पर आज तुम यह सब क्यों कह रही हो?"

मादा ततैया बोली — "आज मकान मालिक कुछ तिल के बीज ले कर आया है। उसने तो पेट भर कर खा लिये हैं। बल्कि सबने पेट भर कर खा लिये हैं फिर भी उसके पास अभी और बहुत सारे बीज हैं। अगर तुम भी उसमें से कुछ ले लोगी तो तुम औरों से ज़्यादा अमीर हो जाओगी।"

यह सुन कर चुहिया बहुत खुश हो गयी और उधर चली जहॉ वे तिल सूख रहे थे। उसने देखा नहीं कि किसान की पत्नी वहॉ एक डंडी लिये बैठी थी।

सो वह तिलों की तरफ दौड़ी और उसने तिलों को खाना शुरू कर दिया। जैसे ही किसान की पत्नी ने देखा कि एक चुहिया उसके तिल खा रही है तो उसने फट से उसके सिर पर एक डंडी मारी।

वह चुहिया बेचारी वहीं की वहीं मर गयी। यही अन्त था उस चुहिया के लालची होने का और किसी काम को बिना सोचे समझे करने के नतीजे को न समझने का।

7 एक कौआ और एक बिल्ला[22]

एक समय की बात है कि एक कौआ और एक बिल्ला दोनों आपस में बड़े गहरे दोस्त थे और साथ साथ रहते थे। एक दिन वे दोनों एक पेड़ के नीचे बैठे हुए थे कि उन्होंने एक चीते[23] को अपनी तरफ आते हुए देखा।

उनको उसके अपनी तरफ आने का तब तक पता नहीं चला जब तक कि वह उनके बिल्कुल ही पास नहीं आ गया।

पर जैसे ही वह उनके पास तक आ गया तो कौआ तो उड़ कर एक पेड़ के ऊपर बैठ गया पर बिल्ले को भागने का मौका ही नहीं मिला।

बिल्ला उसको देखते ही घबरा गया। उसने कौए से पूछा — "कौए मेरे दोस्त, क्या तुम मुझे नहीं बचा सकते? मेरी सारी उम्मीदें तो तुम्हीं पर लगी हैं।"

[22] The Cat and the Crow – an animal tale from Arabian Nights. Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/62-cat-crow.htm

[23] Translated for the word "Leopard"

कौआ बोला — "बात यह है कि दोस्त और भाई को एक दूसरे के बारे में तभी सोचना चाहिये जब वे किसी खतरे में पड़े हों सो तुम ने अच्छा किया जो मुझे याद किया।"

तभी कुछ चरवाहे अपने शिकारी कुत्तों के साथ उधर से गुजर रहे थे। कौआ उनकी तरफ उड़ा और अपने पंखों से कॉव कॉव करते हुए उनके सामने की थोड़ी सी जमीन खोद दी।

फिर वह एक कुत्ते के ऊपर गया और उसके मुँह पर अपने पंख फड़फड़ाये और फिर थोड़ी दूर तक चीते के पास तक उड़ गया।

उस कुत्ते ने उसका यह सोच कर पीछा किया कि वह उसको पकड़ लेगा और खा लेगा। उसी समय एक चरवाहे ने अपना सिर ऊपर उठाया और कौए को जमीन के ऊपर उड़ते देखा।

सो उसने उस कौए का पीछा किया और वह कौआ उसको अपने पीछे पीछे भगाते हुए उस जगह ले आया जहॉ वह चीता था।

जब कुत्तों ने उस चीते को देखा तो वे दौड़ कर उस पर टूट पड़े। कौआ तो वहॉ से उड़ कर भाग गया और चीते को भी उन भयानक कुत्तों के देख कर उस बिल्ले को वहीं छोड़ कर वहॉ से भाग जाना पड़ा।

इस तरह कौए ने अपने दोस्त बिल्ले की जान बचायी।

8 एक चिड़ा और एक मोर[24]

एक बार की बात है एक चिड़ा रोज सुबह सुबह चिड़ियों के राजा से मिलने जाता था और सारा दिन उसकी सेवा में खड़ा रहता था। वह सबसे पहले वहाँ पहुँचता था और सबसे बाद में वहाँ से वापस आता था।

एक बार कुछ चिड़ियों ने एक पहाड़ पर एक मीटिंग की। उनमें से एक ने दूसरी से कहा — "हालाँकि हम लोग आपस में बहुत अलग अलग हैं पर अगर हमारा एक राजा हो जो हमारी देखभाल करता रहे तो इससे हमारे सारे भेद भाव खत्म हो जाते हैं और हम लोग एक हो जाते हैं।"

तभी वह चिड़ा वहाँ आया और उसने उन सबको मोर को अपना राजा चुनने की सलाह दी। यही मोर वह राजकुमार था जिसको वह चिड़ा रोज मिलने जाया करता था।

[24] A Sparrow and a Peacock – an animal tale from Arabian Nights. Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/63-peacock.htm

सो उन चिड़ियों ने उस मोर को अपना राजा चुन लिया और उस चिड़े को उसका वज़ीर[25] बना दिया। अब वह चिड़ा उसकी सेवा में खड़े रहने की बजाय उसके और बहुत सारे दूसरे काम भी देखने लगा।

एक दिन ऐसा हुआ कि वह चिड़ा अपने समय पर राजा के पास नहीं आया तो मोर उसके बारे में चिन्तित हो गया। पर थोड़ी ही देर में वह चिड़ा आ गया।

मोर ने उससे पूछा — "वज़ीर जी आज तुमको देर क्यों हो गयी? तुम जानते हो कि तुम मेरे सारे नौकरों में मेरे सबसे ज़्यादा नजदीक हो और मेरे सबसे प्यारे लोगों में भी सबसे ज़्यादा प्यारे हो फिर भी...।"

चिड़ा बोला — "राजा साहब, असल में मैं जब इधर आ रहा था तो मैंने एक चीज़ देखी जिस पर मुझे कुछ शक हो रहा है उससे मैं डर भी गया और उसी वजह से मुझे देर भी हो गयी।"

मोर ने पूछा — "और वह ऐसी क्या चीज़ है?"

चिड़ा बोला — "राजा साहब, मैंने एक आदमी को अपने घोंसले के पास एक जाल बिछा कर बैठे हुए देखा। उसने उस जाल के बीच में कुछ दाने बिखरा रखे थे और वह उनसे कुछ दूरी पर बैठा था।

[25] Vazeer means Prime Minister

मैं वहॉ बैठा देखता रहा कि वह क्या करता है। तभी मैंने देखा कि एक सारस और उसकी पत्नी उस जाल में फॅस गये। वे दोनों रोने लगे।

शिकारी उठा और उन दोनों को उठा कर अपने घर ले गया।

यही बात मुझे परेशान कर रही थी और यही वजह थी जिसकी वजह से मुझे आने में इतनी देर भी हो गयी। पर अब मैंने सोच लिया है कि मैं उस जाल के डर की वजह से उस घोंसले में नहीं रहूॅगा।"

मोर बोला — "तुम अपना घर मत छोड़ो क्योंकि जो कुछ तुम्हारी किस्मत में लिखा है उसके खिलाफ कुछ नहीं हो सकता।" चिड़ा उसकी बात मान गया और धीरज रख कर वहीं रहता रहा।

वह अपना ख्याल रखता रहा और राजा के लिये खाना ले कर जाता रहा। राजा को उस खाने में से जो अच्छा लगता था वह वह खा लेता था फिर पानी पीता और बाद में चिड़े को वापस भेज देता।

एक दिन चिड़ा राजा के मामलों को देख रहा था कि उसने दो चिड़ों को जमीन पर लड़ते हुए देखा तो अपने मन में सोचा कि मैं जो राजा का वज़ीर हूॅ तो उसका वज़ीर होने के नाते दो चिड़ों को लड़ते हुए कैसे देख सकता हूॅ।

अल्लाह की कसम मुझे जा कर उनमें शान्ति करानी चाहिये। यह सोच कर वह उनमें शान्ति कराने के लिये उड़ा पर शिकारी ने तो अपना जाल सब तरफ फेंक रखा था और वह चिड़ा उनके बीच में जा कर फॅस गया।

चिड़े के फॅसते ही वह शिकारी उठा और उस चिड़े को यह कहते हुए अपने घर ले गया — "आज कितना सुन्दर चिड़ा मेरे हाथ लगा है। मैंने इतना सुन्दर और मोटा चिड़ा इससे पहले कभी नहीं देखा। आज तो मजा आ गया।"

उधर वह चिड़ा सोच रहा था — "मैं तो उसी जाल में फॅस गया जिसका मुझे डर था और इस काम को भी किसी और ने नहीं बल्कि मोर ने खुद ने ही मुझे करने को कहा था।

पर मुझे मोर को इस बात के लिये जिम्मेदार नहीं ठहराना चाहिये क्योंकि मेरी किस्मत तो मोर नहीं बदल सकता और अपनी किस्मत से तो मोर भी नहीं बच सकता।"

9 एक मुर्गे और लोमड़े की मजेदार कहानी[26]

एक बार एक गॉव में एक शेख[27] रहता था। उसकी अपने गॉव में बहुत अच्छी साख थी और वह एक बहुत ही समझदार आदमी था। उसके अपने पास बहुत सारे मुर्गे मुर्गियॉ थे।

वह उनको बढ़ाने के लिये उनकी बहुत अच्छी देखभाल करता था और उनके अंडे अपने खाने के लिये इस्तेमाल करता था।

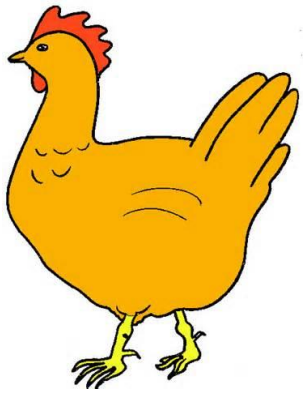

उन बहुत सारे मुर्गों में उसके पास एक बूढ़ा मुर्गा भी था जो बहुत ही हाजिरजवाब था। वह अपनी किस्मत से काफी दिनों तक लड़ चुका था सो वह अब दुनियॉ के मामलों में बहुत होशियार हो गया था।

एक दिन ऐसा हुआ कि यह बूढ़ा मुर्गा कहीं बाहर दूसरे खेत पर घूमने गया। रास्ते में उसको जो कुछ मिल गया वह उसे उठा उठा कर खाता भी गया जैसे गेंहू, जौ, तिल के दाने आदि आदि।

पर क्योंकि वह बहुत ही लापरवाही से घूम रहा था इसलिये घूमते घूमते वह अपना घर बहुत पीछे छोड़ आया और वहॉ से बहुत दूर निकल आया।

---

[26] The Pleasant History of the Cock and the Fox – an animal tale from Arabian Nights. Translated from the book “More Stories From the Arabian Nights” by Richard Burton. 1957. It may be read in English at : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/64-cock-fox.htm

[27] Sheikh – is a respected leader or head of a village or tribe or family in Arabian countries.

उसको पता ही नहीं चला कि वह कितनी दूर आ गया था। अचानक उसको लगा कि वह तो किसी जंगल में अकेली जगह आ गया था।

उसने अपनी दाहिनी तरफ देखा अपनी बायीं तरफ देखा, अपने पीछे की तरफ देखा अपने चारों तरफ देखा पर उसे वहॉ कोई भी ऐसा दिखायी नहीं दिया जो उसका दोस्त हो या फिर जिसको वह जानता हो।

अब वह यह सोचता हुआ वहीं का वहीं खड़ा रह गया कि वह अब करे तो क्या करे। उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

वह यह सब सोच ही रहा था कि उसने एक लोमड़े को अपनी तरफ आते देखा। उसको देख कर तो वह डर के मारे कॉपने लगा।

तभी उसको अपने पास एक ऊॅची सी दीवार दिखायी दे गयी। वह तुरन्त उड़ा और उस दीवार पर जा कर बैठ गया। वहॉ पहुॅच कर उसकी सॉस में सॉस आयी क्योंकि अब उसका दुश्मन उस तक नहीं पहुॅच सकता था।

तभी लोमड़ा भी उस दीवार के नीचे तक आ गया। उसने मुर्गे को उस दीवार पर बैठे देखा तो उसके मुॅह में पानी तो आ गया पर उसको यह भी पता चल गया कि वह उस दीवार पर नहीं चढ़ सकता था।

अब वह क्या करे। सो उसने ऊपर की तरफ देख कर मुर्गे से कहा — "अल्लाह करे तुम शान्ति से रहो। तुम एक बहुत ही अच्छे दोस्त और भाई हो।"

पर मुर्गे ने न तो उसकी तरफ मुॅह फेर कर ही देखा और न ही उसकी बात का कोई जवाब दिया।

लोमड़ा फिर बोला — "भाई यह क्या बात हुई कि न तो तुम मेरे सलाम का ही जवाब दे रहे हो और न ही तुम मुझसे बात कर रहे हो।" पर फिर भी मुर्गे ने उसको कोई जवाब नहीं दिया।

लोमड़ा फिर बोला — "क्या तुमको याद नहीं कि एक बार तुमने मुझे बड़ी होशियारी की सलाह दी थी। तुमने मुझे गले लगाया था और मेरे मुॅह पर चूमा भी था।"

पर फिर भी मुर्गा उससे कुछ नहीं बोला। वह चुपचाप ही रहा।

लोमड़ा फिर बोला — "ओ मेरे भाई, जानवरों का राजा शेर और चिड़ियों का राजा चील अभी एक ऐसी जगह के सफर से वापस आये हैं जहॉ बड़े बड़े घास के मैदान हैं, बहुत सारी घास उगती है, खूब सारा पानी है और खूब सारे फूल खिलते हैं।

वहॉ बहुत सारे किस्म के जानवर और चिड़ियें अपने अपने साथियों के साथ घूम रहे हैं। उन दोनों यानी जानवरों के राजा शेर ओर चिड़ियों के राजा चील ने वहॉ सब जानवरों और चिड़ियों के बीच शान्ति, सुरक्षा, इज़्ज़त और एक दूसरे के लिये दया बना कर रखी हुई है।

और अगर वहॉ कोई एक दूसरे को घायल करता है तो उसको मौत की सजा मिलती है। वहॉ उन्होंने सबको प्यार से और आपस में मिल जुल कर रहने के लिये और एक ही जगह बैठ कर खाने के लिये कह रखा है।

उन्होंने मुझे अपना दूत बनाया और कहा कि मैं चारों तरफ जा जा कर सबको इकट्ठा करूँ और उनको यह बताऊँ कि जो कोई उनका यह हुकुम नहीं मानेगा तो उसको सजा मिलेगी। इसलिये तुम आराम से नीचे उतर आओ तुम्हें मुझसे डरने की जरूरत नहीं है।"

पर इस सबको सुनने के बाद भी मुर्गे ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जैसे उसने यह खबर सुनी ही न हो। वह चुपचाप वहीं बैठा दूर देखता रहा।

इतना सब कुछ कहने के बाद भी जब मुर्गे ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया तो लोमड़े का धीरज छूट गया।

वह तो मुर्गे को पकड़ना चाहता था सो वह मुर्गे से बोला — "तुम मुझे जवाब दे कर यह क्यों नहीं बताते कि तुमने मेरी बातें सुन भी ली हैं या नहीं। बल्कि तुम तो उस दूत से भी अपना चेहरा दूसरी तरफ फिरा रहे हो जिसको शेर और चील ने भेजा है।

मुझे तुम्हारे लिये डर लगता है मुर्गे भाई। क्योंकि अगर तुमने मेरे साथ आने से मना कर दिया तो वे सब जानवर और चिड़ियें जो वहॉ घास के मैदान में इकट्ठे हुए हैं वे सब तुमको बुरा भला कहेंगे।"

जब मुर्गे ने लोमड़े की इस बात का भी कोई जवाब नहीं दिया तो लोमड़ा बोला — "अगर तुम मेरे साथ नहीं आ रहे तो न सही कम से कम मुझे अपना जवाब तो बता दो।"

अब मुर्गा बोला — "लोमड़े भाई, मुझे मालूम है कि तुम मुझे अच्छी बात बता रहे हो। अपने राजा के दूत की हैसियत से मैं तुम्हारी बहुत इज़्ज़त करता हूँ पर अब मेरे हालात बदल गये हैं।"

यह सुन कर लोमड़ा आश्चर्य से बोला — "वह कैसे मुर्गे भाई? और अब क्या हालात हो गये हैं तुम्हारे?"

मुर्गा बोला — "क्या तुम वह देख पा रहे हो जो मैं देख रहा हूँ?"

"वह क्या है?"

"मैं नीचे तो उड़ता हुआ धूल का बादल देख रहा हूँ और उस धूल के बादल के ऊपर गोले में उड़ती हुई चीलें देख रहा हूँ।"

यह सुन कर लोमड़ा डर गया। वह बोला — "ज़रा सँभल कर रहना मुर्गे भाई कहीं कोई गड़बड़ न हो जाये तुम्हारे साथ।"

मुर्गे ने अपना देखना जारी रखते हुए कहा — "मुझे एक चिड़िया भी उड़ती हुई दिखायी दे रही है।"

यह सुन कर तो लोमड़ा और भी परेशान हो गया। उसने डर कर मुर्गे से पूछा — "ज़रा देख कर तो बताओ मुर्गे भाई कि कहीं वह ग्रेहाउंड कुत्ता[28] तो नहीं है?"

मुर्गा बोला — "सच तो केवल अल्लाह ही जानता है क्योंकि मैं अभी उसको साफ साफ नहीं देख पा रहा हूॅ पर हॉ उसकी लम्बी लम्बी टॉगें मुझे दिखायी दे रही हैं और वह इधर ही की तरफ को चला आ रहा है।"

जैसे ही लोमड़े ने यह सुना तो वह मुर्गे से चिल्ला कर बोला — "मुझे अब यहॉ से जाना चाहिये मुर्गे भाई।" और यह कह कर वह वहॉ से जितनी जल्दी हो सकता था भाग लिया।

उसको भागते देख कर मुर्गा चिल्लाया — "तुम क्यों भाग रहे हो लोमड़े भाई तुमने तो किसी को कोई नुकसान नहीं पहुॅचाया?"

लोमड़ा बोला — "मुझे तो ग्रेहाउंड से बहुत डर लगता है क्योंकि वह मेरा दोस्त नहीं है और मैं तो उसको जानता भी नहीं हूॅ।"

मुर्गा बोला — "पर तुमने तो अभी जानवरों और चिड़ियों के राजा शेर और चील के दूत की हैसियत से मुझसे यह नहीं कहा था क्या कि जानवरों और चिड़ियों के राजा ने जंगल में शान्ति कर दी

[28] Tall and lean, the Greyhound is the fastest breed of dog. Just at a sight, hound breed dog pursues the game using its vision and speed – see its picture above.

है और जो कोई एक दूसरे को घायल करेगा उसको मौत की सजा मिलेगी?"

अब लोमड़ा तो बहुत चालाक होता है सो वह तुरन्त बात बना कर बोला — "जिस समय यह सब वहॉ हो रहा था तो यह ग्रेहाउंड कुत्ता वहॉ नहीं था इसलिये इसको यह बात मालूम नहीं है।"

कह कर वह लोमड़ा वहॉ से तुरन्त ही उड़न छू हो गया और मुर्गा अपने दुश्मन से बच गया।

लोमड़े के जाने के बाद मुर्गा दीवार पर से उतर आया और अपने अल्लाह का शुकिया करते हुए कि उसने उसको हिफाजत से अपने लोगों के पास पहुॅचा दिया अपने मालिक के घर की तरफ चल दिया।

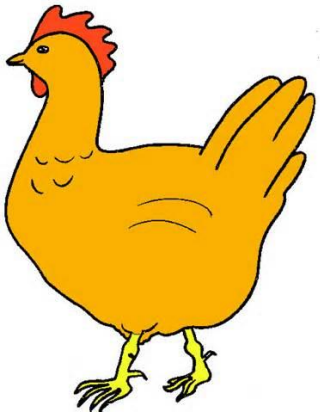

10 चिड़ियें, जानवर और बढ़ई[29]

जानवरों की यह कहानी बहुत ही मजेदार है। हो सकता है कि तुम इसको बार बार पढ़ना पसन्द करो और हर किसी को खास करके अपने छोटे भाई बहिनों को बार बार सुनाना पसन्द करो।

बहुत पुरानी बात है कि एक मोर अपनी पत्नी के साथ एक समुद्र के किनारे रहता था।

वहॉ बहुत सारे जंगली जानवर रहते थे इसलिये वह और उसकी पत्नी रात को एक पेड़ की शाख पर सोया करते थे और रात को ही खाने की खोज में भी निकला करते थे।

पर दिन ब दिन उनका डर बढ़ता ही जाता था सो एक दिन उन्होंने वहॉ से कहीं और जाने का इरादा कर लिया।

वे अपने घर के आस पास चारों तरफ घूमे और उन्होंने एक टापू ढूँढ लिया जहॉ बहुत सारे नाले थे और बहुत सारे फलों के पेड़ थे। सो वे दोनों वहीं चले गये और जा कर वहीं रहने लगे।

[29] The Birds the Beasts and the Carpenter – an animal tale from Arabian Nights. Adapted from the book "More Stories From the Arabian Nights" by Richard Burton. 1957. It may be read in English at http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-4/77-birds-beasts.htm

कुछ समय बाद जहॉ वे मोर और मोरनी रह रहे थे उस पेड़ के नीचे एक बतख आयी। उन्होंने उस बतख से उसके बारे में पूछा तो बतख बोली — "मैं तो इस आदमी से बहुत परेशान हूॅ।"

मोर बोला — "डरो नहीं। तुम्हारी हिफाजत करने के लिये हम लोग यहॉ हैं।"

बतख यह सुन कर बहुत खुश हुई और उसने अल्लाह का बहुत बहुत शुक्रिया अदा किया।

मोरनी बोली — "समुद्र में से हो कर इस टापू पर कोई आदमी कैसे आ सकता है? इसलिये तुम खुश रहो और उस आदमी की बिल्कुल चिन्ता न करो जिससे तुम इतनी परेशान हो।"

इस पर बतख बोली — "मैं तो वहॉ खुशी खुशी रह ही रही थी कि एक रात जब मैं सो रही थी तो एक आवाज ने मुझसे कहा — "तुमको आदमी से बहुत सावधान रहना चाहिये। उसका कभी विश्वास न करना क्योंकि वह बहुत ही चालाक होता है।

वह समुद्र से मछली बाहर निकाल सकता है, वह चिड़ियों को अपनी गोली का निशाना बना सकता है। और यही नहीं वह तो हाथी को भी अपने जाल में फॉस सकता है। उसकी शरारतों से कोई नहीं बच सकता। वह बहुत ही ताकतवर है।"

मैं तुमको वही बता रही हूॅ जो मैंने सुना। बस उस दिन से मैं इतनी डर गयी कि मेरा डर गया ही नहीं।

मैं इधर गयी, मैं उधर गयी। फिर में एक पहाड़ पर आयी। वहॉ मैंने एक शेर के बच्चे को एक गुफा के दरवाजे पर बैठे देखा। वह मुझे देख कर बहुत खुश हुआ और उसने मुझे अपने पास बुलाया।

जब मैं उसके पास पहुॅची तो उसने मुझसे पूछा — "तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा स्वभाव कैसा है?"

मैंने कहा — "मेरा नाम बतख है और मैं एक किस्म की चिड़िया हूॅ। पर तुम यहॉ क्या कर रहे हो?"

शेर का बच्चा बोला — "मेरे पिता ने मुझे आदमी के बारे में सावधान कर दिया है कि मैं उससे बच कर रहूॅ पर इस रात मैंने सपने में एक आदमी देखा।"

बतख आगे बोली — "और फिर उसने मुझे आदमी के बारे में वही बताया जो मैंने तुमको अभी बताया।

सो मैंने उस शेर के बच्चे से कहा — "ओ शेर के बच्चे, मैं तुम्हारी शरण में आ जाती हूॅ क्योंकि तुम तो उसको मार सकते हो। आखिर तुम तो जानवरों के राजा हो न।" और मैंने उससे आदमी को मारने की प्रार्थना की।

वह शेर का बच्चा वहॉ से तुरन्त ही उठ गया और सड़क की तरफ भागा। मैं उसके पीछे पीछे भागी।

भागते भागते हम दोनों सड़क की एक ऐसी जगह आ गये जहॉ से सड़क दो तरफ जाती थी। वहॉ एक नंगा गधा धूल में लोट रहा था।

शेर के बच्चे ने उससे पूछा — "तुम्हारी किस्म क्या है और तुम यहॉ क्यों आये हो?"

गधा बोला — "मेरी किस्म गधा है और मैं आदमी से दूर भाग रहा हूँ।"

शेर के बच्चे ने पूछा — "क्या तुम डरते हो कि वह तुमको मार देगा?"

गधा बोला — "नहीं नहीं वह बात नहीं। मैं डरता हूँ कि वह मुझ पर काठी रख देगा, फिर वह मुझ पर सवारी करेगा और मुझे मेरी ताकत से भी ज़्यादा भगायेगा।

और अगर मैं रेंकूँगा तो वह मुझे मारेगा। जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तो वह मुझको पानी ढोने वालों को दे देगा जो मेरे ऊपर फिर पानी ढोयेंगे।"

सो ओ मोरनी, जब मैंने गधे से यह सब सुना तो मैं तो कॉप गयी और मैंने शेर के बच्चे से कहा — "तुमने सुना? मैं इस सबसे बहुत डरती हूॅ।"

शेर के बच्चे ने गधे से फिर पूछा — "तो फिर अब तुम कहॉ जा रहे हो?"

गधा बोला —"मैंने आज सुबह सुबह एक आदमी देखा था सो अब मैं वहॉ जा रहा हूॅ जहॉ मुझे वह आदमी न ढूॅढ सके।"

जब हम लोग ये बातें कर रहे थे कि तभी धूल का एक और बादल उठा और एक घोड़ा हमने अपनी तरफ आता हुआ देखा।

शेर के बच्चे ने उससे पूछा — "तुम्हारी क्या किस्म है और तुम इस रेगिस्तान में इस तरह क्यों भागे जा रहे हो?"

घोड़ा बोला — "मेरा नाम घोड़ा है और मैं आदमी से भाग रहा हूॅ।"

शेर का बच्चा बोला — "तुमको यह कहते हुए शरम आनी चाहिये। तुम इतने शाही जानवर हो कर भी आदमी से डर कर भाग रहे हो?

देखो, मुझे देखो। मैं इतना छोटा हूॅ फिर भी मैंने यह सोच लिया है कि मैं उस आदमी का सामना करूॅगा जिससे सब डरते हैं और उसे खा जाऊॅगा ताकि मैं इस बतख की रक्षा कर सकूॅ।

पर तुम तो जो मैंने तय किया है उससे वापस लौटे जा रहे हो। तुमने कहा कि तुमको आदमी ने गुलाम बना रखा है और तुम उस को जीत नहीं सके।"

घोड़ा हॅसा और बोला — "हॉ तुम ठीक कह रहे हो। मैंने अभी तुमको यही कहा। असल में उसको जीतना मेरी ताकत से बाहर है।

वह मुझे बॉध सकता है, वह मुझ पर सवारी कर सकता है और जब मैं बूढ़ा और कमजोर हो जाऊॅगा तो वह मुझको मशीन चलाने वाले को बेच देगा जो मुझसे मशीन घुमवाता रहेगा।

मेहरबानी करके मुझे इन सब मुसीबतों की याद मत दिलाओ जो वह मुझे देगा।"

शेर का बच्चा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ। उसने घोड़े से पूछा — "तुमने उसको कब छोड़ा था?"

घोड़ा बोला — "मैंने उसको दोपहर को छोड़ा था और तभी से वह मेरे पीछे है।" कह कर वह घोड़ा वहॉ से दौड़ता हुआ चला गया।

जब शेर का बच्चा घोड़े से इस तरह की बातें कर रहा था तो उसने एक और धूल का बादल अपनी तरफ उड़ता हुआ आता हुआ देखा।

उसमें से एक गुस्से से भरा एक ऊँट निकल कर आ रहा था। जब उस छोटे से शेर के बच्चे ने उस बड़े से ऊँट को देखा तो उसको लगा कि आदमी आ गया।

वह उस पर कूदने को ही था कि मैंने उससे कहा — "ओ राजकुमार, यह आदमी नहीं है। यह तो ऊँट है और इसके भागने से ऐसा लग रहा है कि यह भी आदमी से डर कर भाग रहा है। तुम इससे ज़रा पूछ कर देखो तो कि यह इस तरह से क्यों भागा आ रहा है।"

इतने में ऊँट दौड़ता दौड़ता वहाँ आ गया। आ कर उसने शेर के बच्चे को सलाम किया।

शेर के बच्चे ने पूछा — "तुम इतनी तेज़ तेज़ क्यों भागे आ रहे हो?"

ऊँट बोला — "ओ राजकुमार, मैं आदमी से डर कर भाग रहा हूँ।"

शेर के बच्चे ने फिर पूछा — "ऐसा कैसे हुआ कि तुम इतने बड़े हो कर आदमी से भाग रहे हो? अगर तुम उसको अपने एक पैर से भी मारोगे तो भी वह मर जायेगा।"

ऊँट बोला — "ओ सुलतान के बेटे, तुम उसे नहीं जानते। उसके सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता। वह मेरी नाक में रस्सी

डालेगा और उस रस्सी को अपने छोटे छोटे बच्चों को पकड़ा देगा और फिर उनके पीछे पीछे मुझे चलना पड़ेगा।

वह मुझसे दिन रात कड़ी मेहनत करवायेगा। फिर जब मैं बूढ़ा और कमजोर हो जाऊँगा तो वह मुझे किसी कसाई को बेच देगा जो मुझे मार कर मेरी खाल और मेरा मॉस दोनों बेच देगा। मेरी उन मुसीबतों को न पूछो जो मुझे आदमी के हाथों सहनी पड़ती हैं।"

शेर के बच्चे ने फिर पूछा — "तुमने आदमी को कब छोड़ा?"

ऊँट बोला — "शाम को। और वह मेरे पीछे ही आ रहा होगा। मुझे जंगल में जाने दो राजकुमार मुझे रोको नहीं।"

शेर का बच्चा बोला — "तुम तब तक इन्तजार करो जब तक मैं उसको फाड़ कर उसका मॉस तुमको खाने के लिये नहीं दे देता।"

ऊँट बोला — "मुझे डर है कि राजकुमार कि वह बहुत ही चालाक है।"

जब ऊँट शेर के बच्चे से ऐसी बातें कर रहा था कि एक और धूल का बादल उठा और एक बहुत ही पतला दुबला आदमी उसमें से प्रगट हुआ।

उस आदमी के कन्धे पर बढ़ई के औजारों वाली एक टोकरी रखी थी। उसके सिर पर पेड़ की एक शाख और आठ लकड़ी के तख्ते रखे हुए थे। कुछ बच्चे उसका हाथ पकड़े पकड़े चल रहे थे।

वह बहुत धीरे धीरे चला आ रहा था। वह तब तक कहीं नहीं रुका जब तक कि वह शेर के बच्चे के पास तक नहीं आ गया।

जब मैंने उसको देखा तो मैं तो डर के मारे नीचे गिर पड़ी पर वह शेर का बच्चा उठा और उससे मिलने के लिये आगे बढ़ा।

शेर के बच्चे को अपनी तरफ आते हुए देख कर आदमी बोला — "ओ बादशाह। मेहरबानी करके मुझे इस धोखे से बचाइये।" और वह उसके सामने रोने और शिकायतें करने लगा।

उसका रोना और शिकायतों को सुनते हुए शेर का बच्चा बोला — "मैं तुमको इस डर से जरूर बचाऊॅगा। मैं इस जंगल के राजा का बेटा हूॅ। यह तो मेरा कर्तव्य है कि मैं इस जंगल में रहने वाले हर जीव की रक्षा करूॅ। यह सब तुम्हारे साथ किसने किया है? और तुम हो कौन?

मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी में तुम्हारे जैसा कोई और नहीं देखा। न ही तुम्हारे जैसी कोई सुन्दर शक्ल देखी है और न ही तुम्हारे जैसी किसी की मीठी बोली सुनी है।"

आदमी बोला — "ओ बादशाह, मैं एक बढ़ई हूॅ और जिसने भी मेरे साथ बुरा किया है वह आदमी है। इस रात के बाद कल की सुबह वह आपके साथ होगा।"

यह सुन कर तो शेर का बच्चा गुस्से से दहाड़ा और बोला — "अल्लाह की कसम, मैं उसका इन्तजार करूॅगा और मैं तब तक अपने पिता के पास नहीं लौटूॅगा जब तक मैं उसको जीत नहीं लूॅगा।

मैं देख रहा हूॅ कि तुम बहुत छोटे छोटे कदम रख रहे हो और तुम इन जंगली जानवरों के साथ ठीक से चल भी नहीं पा रहे हो। यह बताओ कि तुम जा कहॉ रहे हो?"

बढ़ई बोला — "मैं तो आपके पिता जी के वजीर लिंक्स[30] के पास जा रहा हूॅ। क्योंकि जब उन्होंने सुना कि उनके जंगल में एक आदमी ने कदम रखा है तो वह तो खुद ही उससे बहुत डर गये हैं।

उन्होंने मुझे बुला भेजा है कि मैं उनके लिये एक घर बना दूॅ ताकि उस घर में वह आदमी से बच कर रह सकें। कोई आदमी उन के घर में न आ सके। इसी लिये मैं ये तख्ते ले कर उधर ही की तरफ जा रहा हूॅ। इन तख्तों से मैं उनके लिये घर बनाऊॅगा।"

शेर के बच्चे ने जब यह सुना तो वह लिंक्स से जल उठा। उसको लगा कि उसके पिता के वजीर से पहले उसके लिये एक घर बनना चाहिये सो उसने बढ़ई से कहा — "अभी तुम्हें उसकी सहायता करने की कोई जरूरत नहीं है इन तख्तों से पहले तुम मेरे लिये एक घर बना दो।

जब तुम मेरा घर बना चुको तब तुम लिंक्स के पास जा सकते हो और उसके लिये वह सब कर सकते हो जो वह चाहे।"

बढ़ई बोला — "अल्लाह कसम मैं अभी आपके लिये घर नहीं बना सकता जब तक मैं लिंक्स के लिये घर न बना लूॅ। पर हॉ जैसे

[30] Lynx – a kind of big cat

ही मैं उनका घर बना कर खत्म कर लूँगा मैं आपके पास आ जाऊँगा और सबसे पहले आपका ही घर बनाऊँगा।"

शेर का बच्चा चीखा — "अल्लाह की कसम मैं भी तुमको यह जगह छोड़ने देने वाला नहीं जब तक कि तुम इन तख्तों से मेरे लिये घर नहीं बना देते।"

यह कह कर वह आदमी के ऊपर कूद पड़ा। उसने उसकी औजारों की टोकरी उसके कन्धे से गिरा दी और उसको भी जमीन पर गिरा कर उसको बेहोश सा कर दिया।

शेर का बच्चा फिर बोला — "तुम कमजोर हो, तुम्हारे अन्दर ताकत नहीं है तुमको आदमी से डरना चाहिये।"

यह सुन कर बढ़ई उससे बहुत नाराज हो गया पर प्रगट में मुस्कुरा कर बोला — "ठीक है, ठीक है। आप ठीक कह रहे हैं। मैं पहले आप ही के लिये घर बना दूँगा।"

कह कर वह शेर के बच्चे के लिये उन तख्तों से घर बनाने में लग गया।

उसने सबसे पहले उन तख्तों से जो वह अपने साथ लाया था एक बक्सा बनाया। उस बक्से का दरवाजा उसने खुला छोड़ दिया जिसके लिये उसने एक बड़ा मजबूत ढकना बनाया जिसमें बहुत सारे छेद थे।

फिर उसने एक हथौड़ा और कुछ पुरानी कीलें निकालीं और शेर के बच्चे से बोला — "अब इस खुली जगह के रास्ते से आप

अपने घर में घुस जाइये ताकि मैं इसको आपके नाप का बना सकूँ।"

शेर का बच्चा अपने उस नये घर को देख कर बहुत खुश हुआ और उस बक्से में घुस गया। बढ़ई बोला — "अब आप इसमें अपनी टाँगों और हाथों को सिकोड़ कर बैठ जाइये।"

शेर के बच्चे ने वैसा ही किया पर उसकी पूँछ फिर भी बाहर ही रह गयी। वह बाहर आना चाहता था पर बढ़ई बोला — "ज़रा रुक जाइये। मुझे देखने दीजिये अगर मैं आपकी पूँछ के लिये भी थोड़ी सी जगह बना सकूँ तो।"

बढ़ई ने उसकी पूँछ भी किसी तरह से उस बक्से के अन्दर ठूँस दी। फिर उसने वह छेदों वाला ढक्कन उस बक्से के दरवाजे पर कीलों से जड़ दिया।

यह देख कर शेर का बच्चा चिल्लाया — "ओ बढ़ई, यह तुमने मेरे लिये कैसा तंग घर बनाया है? यह तो बहुत ही छोटा है। मुझे इसमें से बाहर निकालो। इसमें तो मेरा दम घुट रहा है।"

बढ़ई हँसते हुए बोला — "अब आप इसमें से बाहर नहीं निकल सकते ओ जंगल के राजकुमार। आप जाल में फँस चुके हैं और अब यहाँ से बचने का कोई रास्ता नहीं है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो?"

"आप उसी जाल में फँस चुके हैं जिससे आप बहुत डर रहे थे।"

शेर के बच्चे ने जब यह सुना तब उसको पता चला कि यही वह आदमी था जिसके बारे में उसने इतना सब सुन रखा था।

मैं भी वहॉ से थोड़ी दूर हट गयी यह देखने के लिये कि वह आदमी अब शेर के बच्चे का क्या करेगा।

उस बढ़ई ने उस बक्से के पास एक गड्ढा खोदा, बक्से को उस गड्ढे में फेंका और फिर मेरे तो डर का ठिकाना ही न रहा जब उसने उसमें आग लगा दी। शेर का बच्चा बेचारा वहीं जल कर मर गया।"

जब मोरनी ने बतख से यह कहानी सुनी तो उसने उसको उसकी सुरक्षा के लिये तसल्ली दी और उससे कहा कि क्योंकि वे लोग सब टापू पर थे इसलिये किसी आदमी का वहॉ आना बिल्कुल नामुमकिन था।

बतख बोली — "मुझे डर है कि मेरे ऊपर आज रात को ही कहीं कोई मुसीबत न आ पड़े क्योंकि मुझे फिर उससे कोई नहीं बचा सकता।"

वे लोग जब ये बातें कर रहे थे तो टापू पर धूल का एक बादल उड़ा और उनकी तरफ बढ़ा। जब वह बादल साफ हुआ तो उन्होंने देखा कि एक हिरन[31] वहॉ खड़ा था।

[31] Translated for the word "Antelope" – see the picture above.

मोरनी बोली — "अरे यह तो हिरन है। यह हमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता क्योंकि यह बेचारा तो केवल घास फूस खाता है।"

हिरन ने उन सबको सलाम किया और उनसे कहा — "मैं तो यहाँ केवल इसी लिये आया हूँ क्योंकि यहाँ बहुत सारी घास उगी हुई है। मेरा यहाँ आने का और कोई मतलब नहीं है।"

उसकी दोस्ती भरी बातें सुन कर वे सब बहुत खुश हुए। रात हो गयी थी सो खाना खा कर सब सो गये।

सबकी ज़िन्दगी खुशी खुशी चलते ज़्यादा दिन नहीं बीते थे कि एक दिन एक पानी का जहाज़ आया जो रास्ता भटक कर उधर आ निकला था। उस जहाज़ के आदमियों ने तुरन्त ही इन तीनों दोस्तों को देख लिया।

उनको आते देख कर मोरनी तो पेड़ के ऊपर जा बैठी। हिरन रेत के मैदान की तरफ भाग गया पर बतख तो डर के मारे वहीं की वहीं खड़ी रह गयी। सो उन्होंने उसका पीछा किया और उसको पकड़ कर अपने जहाज़ पर ले गये।

मोरनी तुरन्त उड़ कर हिरन के पास पहुँची। हिरन ने बतख के बारे में पूछा तो मोरनी ने उसे बताया कि दुश्मन उसको अपने जहाज़ पर ले गये हैं और हो सकता है कि अब तक उन्होंने उसको मार भी दिया हो।

मोरनी खुद भी बतख को इस बुरी हालत में फॅसा देख कर उसकी वजह से वह टापू छोड़ना चाह रही थी पर हिरन ने उसकी इस सलाह को नहीं माना सो वे कुछ और दिनों तक वहीं साथ साथ रहे।

मोरनी बोली — "शायद बतख जहाज़ की वजह से नहीं मरी बल्कि वह इसलिये मरी क्योंकि उसने "अल्लाह की जय हो" नहीं कहा था। मुझे तुम्हारे लिये भी ओ हिरन यही डर लगता है क्योंकि तुम भी "अल्लाह की जय हो" नहीं बोलते।"

यह सुन कर हिरन ने भी "अल्लाह की जय हो" कहना शुरू कर दिया और फिर वे वहॉ बहुत दिनों तक आराम से रहे।

Some books on Arabian Nights Stories

The Arabian Nights: tales from a Thousand and One Nights / Translated by Richard Burton

Tenggren's Golden Tales from the Arabian Nights: The Most Famous Stories from the Great Classic, a.. / By Margaret Soifer, Irwin Shapiro. NY, Golden Books. 2003

Stories from the Arabian Nights / Riverside Literature Series. c 1897

Stories from the Arabian Nights / by Edmund Dulac. 1907.

Stories From The Arabian Nights / by Laurence Housman. 1911

Stories from the Arabian Nights / Retold by Laurence Housman. circa 1925

Stories from the Arabian Nights - Very Rare / Circa 1930's

Stories from the Arabian Nights / Vintage Junior Deluxe Edition 1955 Hardcover

Stories from the Arabian Nights. / Retold by Laurence Housman. London, Hodder & Stoughton, 1983

Stories from the Arabian Nights / by Laurence Housman.

Stories from the Arabian Nights / by Naomi Lewis.

Stories from the Arabian Nights / by Amy Steedman

Stories from the Arabian Nights / (no date)

More Stories from the Arabian Nights / 1961

More Stories from the Arabian Nights – as translated from the Arabic / by Sir Richard Burton, edited by Julian Franklin, 10th ed.

Stories from The Arabian Nights - Told To Children / 1905. Amy Steedman Rare Book
Stories from The Arabian Nights Told To Children / 1930. Amy Steedman Rare Book

Stories from The Arabian Nights With Notes / (Not sure what date)

Stories from the Arabian Nights with Notes / 1900 / with nice Illustrations

The Famous Arabic Book Stories The Arabian Nights: Tales from a Thousand and One

Tales from the Arabian Nights / (10-Minute Bedtime Stories)

Tales from the Arabian Nights / story by Lee Wyndham, art Robert J Lee. Whitman. 1750

Vtg/Antique Childrens Stories from the Arabian Nights / illustrated by Helen Strachan Blackie

New Stories from the Arabian Nights' Entertainments; Embracing Aladdin, or the Wonderful Lamp, Ali Baba and the zForty Thieves, Ali Cogia / by Anonymous Pa

Stories from 1001 Arabian Nights: Aladdin and the Wonderful Lamp, The Voyages of Sindbad the Sailor, Ali Baba and the Forty Thieves, and Others

Stories from The Arabian Nights : Sinbad The Sailor / Junior Deluxe Editions HC Book

Sinbad's Seven Voyages and other Stories from the Arabian Nights / by Davidson

Sindbad the Sailor and Other Stories from the Arabian Nights / Illustrated by Edmund Dulac

Sindbad : And Other Stories from the Arabian Nights / by Husain Haddawy. 2008,...

The Tale of Ali Baba and the Forty Thieves: A Story from the Arabian Nights

Ali Baba and the Forty Thieves: From Stories of the Arabian Nights / by Kay Brown and Gerry Embleton. (Classic Fairy Tales)

The Story of the Lame Young Man from the Arabian Nights / by D Ernest Rhys. Kessinger Legacy Reprints.

Some Websites About Arabian Nights Stories

www.arabiantales.org
http://www.candlelightstories.com/storybooks/the-arabian-nights/ Andrew Lang version. 1897.
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/index-arabian-nights.htm
http://www.bartleby.com/16/ - Translated by Edward William Lane

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**